राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी

राजभाषा स्मारिका

हिन्दी पखवाड़ा 14–28 सितम्बर 2015

ग्रामीण विकास मंत्रालय

भारत सरकार

विषय सूची

2015

क्र. सं.	रचना	रचयिता / संकलनकर्ता	पृष्ठ सं.
1	त्यौहार	श्री सतीश चन्द्र माथुर (का.सहायक)	1
2	आफत की बारिश	श्रीमती रागिनी सक्सेना (का.सहायक)	3
3	अतीत	श्री प्रदीप सिंह चितौड़ (लेखाकार)	5
4	जीवन के अनुभव	श्रीमती गुलशन (नि.सहायक)	7
5	ईश्वर की कृपा	श्री नवीन चन्द्र जोशी (का.सहायक)	8
6	निंदा	सुश्री निधी मिगलानी (का.सहायक)	10
7	मत्स्य अवतार की कथा	श्री रामकृष्ण पोखरियाल (नि.सहायक)	11
8	परशुराम अवतार	श्री भूपाल सिंह (का.सहायक)	13
9	माँ	श्रीमती गुलशन (नि. सहायक)	15
10	राज भाषा हिन्दी	सुश्री प्राची गुसांई (का.सहायक)	16
11	जिंदगी के रंग	श्री जयन्त ठाकुर (का. सहायक)	18
12	इंटरनेट और हिन्दी	श्री रोहित कुमार (नि.सहायक)	21
13	जीवन में ''सोच'' का महत्व	श्रीमती रेखा जुयाल (नि.सहायक)	23
14	भलाई की जीत	श्री फईमुद्दीन	25
15	ओणम	श्री वी.मोहनकृष्णन (का.सहायक)	27
16	मेरे साथ–साथ चलना	श्री रामकृष्ण पोखरियाल (नि.सहायक.)	29
17	दर्द	श्री कपिल देव (का.सहायक)	30
18	सूरज	सुश्री वीनू मदान (का.सहायक)	31
19	बुद्धि	श्री पवन (स्टोरमेन)	33
20	हम से मुलाकात हो गई	श्री संजय चौहान (संदेशवाहक)	35
21	नंदा राज की प्रचलित कथा	श्री प्रदीप सिंह (ऑफिस बॉय)	36
22	जीवन में चलते रहना	श्री पवन कुमार (ऑफिस बॉय)	38
23	बेटियाँ	श्री अनिल कुमार (प्रेषक)	39

संदेश

यह हर्ष की बात है कि राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क एंजेसी में हिन्दी को बड़ावा देने के निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं तथा राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार संतोष जनक ढ़ग से हो रहा है। प्रत्येक वर्ष सितम्बर में मनाये जाने वाले हिन्दी के वर्ष एवं हिन्दी पखवाड़े कि राजभषा के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। देखा जाये तो पखवाड़े के दौरान कराई जानेवाली विभिन्न प्रतियोगिताएं हिन्दी में कार्य करने के लिए एक नया उत्साह भर देती हैं तथा अपना दैनिक काम–काज हिन्दी में करने तथा उसको बढ़ावा देने के लिए एक वातावरण तैयार करती हैं।

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एंजेसी में गत आठ वर्षो से निरन्तर प्रकाशित होती आरही राजभाषा स्मारिका भी हिन्दी को बढ़ावा दने में सहायक हो ने के साथ–साथ उन्हें हिन्दी में और अधिक कार्य करने के लिए उत्साहित करती है।

आज हिन्दी न केवल विज्ञापन मिडिया की दुनिया में एक सशक्त भाषा के रूप मे छाई हुई है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुकी है अतः सरकारी कामकाज में भी हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

एजेंसी में लगातार हिन्दी पखवाड़े का आयोजन तथा राजभाषा स्मारिका के प्रकाशन के लिए एजेंसी के सभी अधिकारीगण व कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं।

➢राजेश भूषण
महानिदेशक

त्यौहार

किसी भी समाज अथवा समुदाय में त्यौहार उसकी दो चीजों से जुड़े रहते है। एक तो उस समाज की संस्कृति दूसरे मनोरंजन के साथ। विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखने वाले भारत देश में, जहां समाज में बहुत विविधता पायी जाती है वहीं यहां पर विविध त्यौहार भी मनाऐ जाते हैं जो कि हमारी सामाजिक एकता के प्रतीक हैं। हर क्षेत्र का त्यौहार वहां कि मिट्टी व संस्कृति से जुड़ा होता है। कुछ त्यौहार क्षेत्र की धार्मिक मान्यताओं से भी जुड़े होते हैं। वैसे तो हमारे देश के हर क्षेत्र एवं प्रांत में त्यौहारों का सिलसिला अनवरत चलता रहता है। हमारे अधिकतर त्यौहार वर्षा ऋतु के बाद ही आरम्भ होते हैं। यदि उत्तर भारत की बात की जाए तो यहां भी विभिन्न धर्मावलम्बियों द्वारा विभिन्न त्यौहार मनाये जाते हैं।

जैसाकि हम उत्तर भारत की बात कर रहे हैं तो यहां भी त्यौहारों का सिलसिला वर्षा ऋतु के बाद ही आरम्भ होता है। बंसत पंचमी के पश्चात ग्रीष्मऋतु शीघ्रता से अपने पांव फैलाती चली जाती है। होली के बाद लगभग चार महीने अर्थात अप्रैल, मई, जून व जुलाई में कम त्यौहार ही पड़ते हैं अतः ये महीने बहुत लम्बे महसूस होते हैं। इन महीनो में सामाजिक के साथ–साथ कोई राष्ट्रीय पर्व भी नहीं पड़ता अगस्त का महीना शुरू होते ही राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस का उल्लहास आरम्भ हो जाता है। इसी के साथ ही त्यौहारों का द्वार खुल जाता है। इन्हीं दिनो रक्षा बंधन, जो कि बहन भाई के स्नेह का त्यौहार है आता है। बाजारों में हर साल रंग बिरंगी व नये डिजाइन की राखियां बिकने के लिए आ जाती है। एक से बड़ कर एक डीजाइन, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक राखियां भी शामिल हैं बाजार में आ जाती है। किसी राखी में लाईट होती है तो किसी में म्यूजिक। किसी में घड़ी तो किसी में कार्टून। इसके अलावा देवी–देवताओं, फिल्मी सितारों यहां तक की राजनीतिज्ञों के चित्रों वाली राखियां भी बाजार में आ जाती हैं। इस त्यौहार पर मिठाई आदि का भी खूब आदान–प्रदान होता है। हरियाणा और राजस्थान में घेवर की बहार छा जाती है। बाजारों में हलवाइयों कि दुकानों पर मावे

वाले, ड्राईफ्रूट वाले तथा सादे घेवर की वैराइटियां मिलती है जिन्हें बड़े चाव से खाया जाता है।

राखी समाप्त होते ही जनमाष्टमी की धुन सवार हो जाती है। श्री कृष्ण जनमाष्टमी लगभग सारे देश में ही धूम–धाम से मनाई जाती है। मंदिरों में खूब गहमा–गहमी रहती है। श्री कृष्ण की झांकियां निकाली जाती है। जनमाष्टमी के लगभग दो सप्ताह के बाद गणेश उत्सव आरम्भ हो जाता है। ये मुख्यतः महाराष्ट्र में मनाया जाता है किन्तु छिट–पुट रूप से देश के अन्य भागों में भी मनाया जाता है। ये त्यौहार गणेश चतुर्थी से शुरू हो कर सप्ताह भर चलता रहता है।

इन्हीं दिनों दूर्गा पूजा की तैयारियां भी आरम्भ हो जाती हैं। पूजा का त्यौहार भी खूब धूम–धाम तथा हर्षोल्लास से मनायां जाता है।

इसके बाद तो त्यौहारों का तांता लग जाता है दशहरा, करवा चौथ, अहोई, दिवाली, भैयादूज आदि त्यौहार इन्हीं दिनों आते हैं। कार्तिक पूर्णिमा को बाबा नानक का प्रकाश उत्सव आता है जिसमें भव्य जुलूस निकाला जाता है। इसके बाद ईद व क्रिसमिस आते हैं जो कि देश भर में बहुत हर्षोल्लास से मनाए जाते हैं। जहां बाजारों में ईद की गहमा गहमी होती है वहीं क्रिसमस पर उपहारों का खूब आदान–प्रदान होता है। इसी प्रकार आगे नव वर्ष में लोहड़ी, वसंत पंचमी, शिवरात्रि व होली (दुलेहण्डी) तथा वैसाखी पंजाब तथा विशु व मेसदी के रूप भारत के अन्य क्षेत्रों में भी मनाई जाती है। इस प्रकार देखा जाए तो भारत में वर्ष भर त्यौंहारों का सिलसिला चलता रहता है।

➢ **सतीश चन्द्र माथुर**
कार्यकारी सहायक (वि.एवं प्रशा.)

आफत की बारिश

बारिश में लगता है मौसम बड़ा सुहावना
बूंद–बूंद एक ताल बिछाए पंछी गाए गाना।
बारिश की यह राहत भी अब बनने लगी आफत है
रौद्ररूप पानी का मरुस्थल में देखा
केदारनाथ में भी जिसने मचा दिया कोहराम
आफत की ये बारिश पैगाम था बरबादी का
प्रलय जैसा मंजर सेलाब तबाही का
लाखों को हीला डाला मानो कुदरत का था पैगाम
इन्सान अब तो जाग, इन्सान अब तो जाग
लोगों ने कहा ऐसा देखा न सुना पानी
पानी में बही बस्ती या बस्ती, में बहा पानी
कोई न जान पाया कहां आई आफत की यह बारिश
सड़कें भी बनी दरिया, दरिया तो बने सागर
सैलाब ने हर घर की तस्वीर बदल डाली
रूकने को किसी घर में पलभर न रूका पानी
दरिया से जुदा होकर बाजार में जा पहुंचा
बादल जो न बन पाया बोतल में बिका पानी
इस दौर के शहरों ढूंढे न मिला पानी
हर एक सिकन्दर का अंजाम यही देखा
मिट्टी मे मिली मिट्टी ,पानी में मिला पानी।

➢ **रागिनी सक्सेना**
कार्यकारी सहायक (वि.एवं प्रशा.)

सभ्य

आज कॉलेज में फिर से चहल–पहल शुरू हो गई थी। सब बहुत खुश थे। दो महीने की छुट्टियां के बाद सब एक दूसरे से मिल रहे थे। सब एक दूसरे का हाल–चाल पूछने में व्यस्त थे। हर जगह भीड़ का तांता लगा हुआ था। सब एक दूसरे को बता रहे थे कि कहां–कहां घूमे।

सबको अब इंतजार था तो स्नेहा का। स्नेहा मेरे घर के पास ही रहती थी। उसके पापा की पोस्टिंग बाहर ही रहती थी। इसी कारण हर साल उसका घूमना बहुत हो जाता था। हर साल वो किसी नई जगह जाती थी लेकिन इस बार तो वह जापान गई थी। सब उसका आने का इन्तजार कर रहे थे। अभी तक मैं भी उससे नहीं मिल पाई थी।

हम दोनों कॉलेज से ही साथ ही आते जाते थे। लेकिन वो कल ही वापस आई थी इसलिए उसने बाद में आना था। शायद न आए। तभी फोन की घंटी बजती है। उसका ही फोन था कह रही थी मैं कॉलेज नहीं आऊँगी लेकिन सबको बोल देना मैं कालेज के बाद सबसे मिलने आऊँगी। बहुत सारी बातें बतानी है तुम सबको। कॉलेज खत्म होने के बाद हम सब कैंटीन में स्नेहा का इंतजार करने लगे। स्नेह जैसे आई हम सब उसके पीछे पड़ गए और उससे पूछने लगे कि तुमने वहां क्या–क्या देखा, खाने को क्या–क्या था इत्यादि।

स्नेहा अचानक बोली वहां तो ऐसा लग रहा था कि हम स्वर्ग में पहुंच गए। वहां के लोग इतने अच्छे हैं इतने अनुशासन में रहते हैं, सभ्य हैं और मैनें किसी को अनुशासन तोड़ते नहीं देखा। हरेक काम लाईन से होता है। हमारे यहां की तरह नहीं कि टैक्सी वाले को आवाज लगाए तो एक इधर से बैठ गया तो दूसरा उधर से और लड़ने लगे कि हम पहले हम बैठे। वहां सब अपनी लाईन में खडे होते हैं और अपनी बारी का इंतजार करते हैं और सफाई का तो पूछो मत इतनी सफाई है कि इतनी साफ सुथरी सड़क तुमने देखी भी नहीं होगी।

ऐसी बात करते हुए हाथ में पॉपकॉन का पैकेट और कॉक की बोतल लिए हम कैंटीन से बाहर आ जाते हैं और बस स्टाप की तरफ चल पड़ते हैं। मैं चुपचाप स्नेहा की बातें सुन रही थी। बारी–बारी सब चले जाते हैं। अब हम दोनों ही रह जाते हैं। स्नेहा कहती है कि तुम्हें पता है कि मैनें वहां दो महीने में सिर्फ एक बार ही पार्क में एक बिस्कुट रैपर पड़ा देखा होगा। बस स्टाप पर लम्बी लाईन लग हुई थी लग रहा था कि तीसरी बस में ही नम्बर आएगा। हम लाइन में लग जाते हैं। तभी बस नजर आती है। स्नेहा ने पॉप कॉन का पैकेट तथा कॉक की बोतल फेंकर एक दम बस की तरफ दौड़ पड़ती है और लाईन तोड़कर बस में चढ जाती है। मैं वहीं खड़ी होकर उसकी बातों को सोचने लगती हूं। कभी उसकी फैंकी हुई बोतल को तो कभी पास में बने कूड़ेदान को देखती हूं। जिस पर लिखा था कृपया मेरा प्रयोग करें।

कहना कितना आसान होता है कि वो सभ्य हैं। तभी माँ के फोन की घंट बजती है मम्मी मुझसे पूछती है कि कहां हो तुम साथ में स्नेहा भी है ना? नहीं वो बस में चढ़ गई सभ्य है वो ना।

➢ **निधि**
कार्यकारी सहायक

अतीत

अतीत हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग होता है। अतीत से चल कर वर्तमान से होते हुए ही व्यक्ति भविष्य तय कर सकता है। किन्तु यदि किसी का अतीत कष्ट दायक रहा हो तो उसे भुला देना ही बेहतर होता है वरना उसकी यादें व्यक्ति के वर्तमान एवं भविष्य की उन्नति में बाधा उत्पन्न करेगी। इसी विषय में एक उदाहरण मिलता है कि एक बार एक व्यक्ति ने किसी विचार–गोष्ठि में भाग लेते हुए एक चुटकुला सुनाया जिसे सुनकर लोग खूब हंसे और उन्होंने उसकी इस विनोदपूर्ण प्रस्तुति की बहुत प्रशंसा की। कुछ समय पश्चात उसने फिर वहीं चुटकुला सुनाया तो कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिली। जब उस व्यक्ति ने एक दो बार फिर से वही चुटकुला दोहराया तो लोगों में चिड़चिड़ाहट पैदा हो गई। तब उस व्यक्ति ने कहा कि आपने देखा किसी बात को बार–बार दोहराने से खुशनुमा वातावरण भी बिगड़ जाता है। अतः हमे अपने भूतकाल के दुख–दर्द को बार–बार स्मर्ण कर दुखी नहीं होना चाहिए।

अतीत को स्मर्ण करके भावनात्मक बोझ बढ़ा लेना अच्छी बात नहीं हैं। यह व्यक्ति के आत्मसम्मान को भी प्रभावित कर सकता है। इस लिए अतीत में रह कर जिन्दगी जीना ठीक नहीं है। हमें अतीत के दुख – दर्द को भुला देना चाहिए। यदि हम कोई काम ठीक से नहीं कर पाते तो स्वयं की आलोचना करने लगते हैं। जिससे हम स्वयं को दुखी कर लेते हैं। एक कष्टकर घटना भी जीवन का हिस्सा होती है और इसे प्रेरणा प्राप्त करने की दृष्टि से देखना चाहिए। यदि हम अपनी अप्रिय यादों को पूरी तरह भूलाने की कोशिश करते हैं तो यह संभव नहीं है क्योंकि यादें हमारे मानस पटल पर एक बार छप जाती हैं तो उन्हें मिटाने का कोई तरीका नहीं है। वैसे इनका मनुष्य के मानस पटल पर बना रहना कोई बुरी बात भी नहीं है बस हमें गड़े मुर्दे उखाड़ कर और मानसिक रूप से उन पर प्रतिक्रिया देकर अपना वर्तमान प्रभावित नहीं करना चाहिए नहीं तो ये स्थिति हमारे शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास में बाधा बन जाएगी। अतः ये स्पष्ट है कि जब तक हम अतीत की घटनाओं से छुटकारा नहीं पा लेते हमारा उन्नती करना संभव नहीं है। अतीत कितना भी दुखदायी रहा हो उसे भुला कर ही हम अपने बेहतर भविष्य और सुन्दर वर्तमान के बारे में सोच सकते हैं। कहा भी गया है कि यदि अतीत को

ना भुलाया गया तो वर्तमान और भविष्य का कुछ नहीं बन सकता क्योंकि अतीत से प्रभावित हो कर क्रोध और झुंझलाहट हमें चैन से जीने नहीं देगी।

भविष्य को बेहतर बनाने के लिए वर्तमान में अपने अतीत को भुलाकर भविष्य की ओर बढ़ जाना ही नीति परक है वरना अतीत के मंजरों की बुरी यादें हमारे सुख के अनुभव को प्रभावित करती रहेंगी और हम सानन्द जी नहीं पायगें। व्यक्ति एकाग्रचित हो कर ही अपने सपने और महत्त्वाकांक्षाओं के बारे में सोच सकता है और उन्हें साकार करने के प्रयत्न कर सकता है। हर व्यक्ति के अपने जीवन में आई चुनौतियां और उनसे सीखे गए सबक भिन्न–भिन्न होते हैं और हर व्यक्ति के पीछे उसके अपने जीवन की घटनाएं होती हैं। इसीलिए अपने अतीत को एक घटना समझकर भूल जाना समझदारी होती है।

जैसा की अतीत की यादें समय–समय पर हमें कचोटकर उन्नती में बाधा बनती रहती है तथा हमें एकाग्र नहीं होने देती, और एकाग्रता ही जीवन की सफलता का राज़ है क्योंकि एकाग्रता से किया कोई भी काम पूरा हो जाता है। इसलिए कहा भी गया है कि ''बीती ताही बिसार दे''। अतः जो बीत गया उसे बिसारकर ही जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है। अतीत को भुलाने के लिए कुछ बातें नीचे दी गई हैं :

(क) सर्वप्रथम ऐसे विचारों को दूर रखें जो आपको अतीत का स्मरण करवाते हैं।

(ख) हमेशा यह कोशिश करें कि आपको भविष्य के लिए कुछ करना है और भविष्य के लिए कुछ करने के लिए वर्तमान ही आपका साहयक होता है।

(ग) इस बात की चिंता छोड़ दें कि दुनियां आपसे आगे निकल गई है। यह सोचें कि आप अपने क्षेत्र में कैसे सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(घ) सबसे बड़ी चीज है आत्म विश्वास । जिस व्यक्ति ने अपने आप में आत्म विश्वास विकसित कर लिया वह अपने भविष्य को मन चाहे ढंग से संवारने में सफल हो सकता है।

(च) आत्म सम्मान जीवन का एक बहुत आवश्यक तत्व है क्योंकि यही हमें कुछ करने को प्रेरित करता है। इसलिए आत्म सम्मान आपको जीवनभर सम्मान दिलाता है। अतः उपर्युक्त बातों को अपने जीवन का आधार बनाएं और सब कुछ भूलकर अपने ध्येय पर बढ़ते रहें। सफलता अवश्य मिलेगी।

➢ **प्रदीप चितौड़**
(लेखाकार)

जीवन का अनुभव

एक समय की बात है एक किसान का बैल कुएँ में गिर गया। वह बैल घंटों जोर–जोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

अतः उसने निर्णय किया कि चूंकि बैल काफी बुढ़ा हो चुका था। अतः उसे बचाने से कोई लाभ होने वाला नहीं था और इसलिए उसे कुएँ मे ही दफना देना चाहिए। किसान ने अपने सभी पड़ोसियों की मदद के लिए बुलाया सभी ने एक–एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर दी।

जैसे ही बैल की समझ में आया कि यह क्या हो रहा है और जोर–जोर से चीख–चीख कर रोने लगा और फिर, अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया। सब लोग चुपचाप कुएं में मिट्टी डालते रहे तभी किसान ने कुएं में झांका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया और अपनी पीठ पर पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह बैल एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था । वह हिल–हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था।

जैसे–जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़े से मिट्टी गिराते वैसे–वैसे वह हिल–हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था। जैसे–जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़े से मिट्टी गिराते वैसे–वैसे वह हिल–हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ ऊपर चढ़ जाता जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह बैल कुंएं के किनारे पर पहुंच गया और फिर कूदकर बाहर भाग गया।

ध्यान रखे कि आपके जीवन में भी बहुत सी मुश्किलें आएगीं जो कि आपको आगे बढ़ने से रोकने में बाधक हो सकते हैं।

कोई आपसे आगे निकलने के लिए ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दिखेगा जो आपके आदर्शों के विरूद्ध होंगे। ऐसे में आपको हतोत्साहित होकर कुएं में ही नहीं पड़े रहना है। बल्कि साहस के साथ हर तरह क गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख लेकर उसे सीढ़ी बनाकर बिना अपने आदर्शों का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है। परमात्मा हमेशा हमारे अंग–संग है और वह हमें मुश्किल समय में भी आगे बढ़ने क हिम्मत देते हैं। परमात्मा पर विश्वास हमारी नकारात्मक सोच को साकरात्मक सोच में बदल देता है। इसलिए हमेशा परमात्मा में विश्वास रखें और अपनी सोच सकारात्मक रखें।

➢ **गुलशन**
निजी सहायक

ईष्वर की कृपा

प्रकृति ने सृष्टि की रचना करते समय प्रत्येक चर–अचर प्राणी का ध्यान रखा है। ईश्वर ने हमें जो भी दिया है वह हमारी योग्यता व कर्मो के अनुसार है। मानव इस भूमि पर ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कलाकृति है तथा प्रकृति ने उसे हर तरह से सक्षम बनाया है। उसे एक स्मरणशील मस्तिष्क, प्रत्येक कार्य करने के लिए सक्षम हाथ, देखने श्रवण करने, सूंघने व स्वाद के लिए पंच इन्द्रियां प्रदान की हैं। इसके साथ–साथ ही प्रकृति ने वायु, जल, पावक, पृथ्वी एवं आकाश जैसे पांच तत्व प्रदान किए हैं। इसके अलावा उसने मनुष्य की भूख मिटाने के लिए तरह–तरह के अनाज, सब्जियां, फल, दूध, दही व माखन जैसे उत्तम प्रदार्थ उपलब्ध कराए हैं किन्तु फिर भी मनुष्यों को संघर्षरत व असंतुष्ट पाते हैं। जिसका कारण अकर्मण्य तथा श्रम ना करने की प्रवृति है। इस धरती पर ईश्वर ने जो भी उपलब्ध कराया है हर व्यक्ति अपनी मेहनत लग्न व बुद्धि से प्राप्त कर सकता है। किन्तु ऐसा दृष्टि गोचर नहीं होता । किसी ने सत्य ही कहा है कि ''सकल पदार्थ है जग माही, कर्महीन नर पावत नाही''।

बचपन से लेकर बुढ़ापे की अवस्था तक मनुष्य अपने भाग्य को कोसता रहता है तथा भगवान को दोष देता रहता है। जिसका मुख्य कारण मनुष्य की असीम ईच्छाएं हैं। यदि किसी विद्यार्थी को परीक्षा में उसकी आशा से कम अंक मिलते हैं तो वह इसका दोष ईश्वर पर मड़ देता है। इसी प्रकार अच्छे अंक प्राप्त करने वाले को यदि इच्छानुरूप कहीं पर दाखिला नहीं मिलता तो वह भी ईश्वर को दोष देता है। दाखिला मिल जाए तो अच्छी नौकरी या व्यवसाय की इच्छा। फिर सुन्दर व सुशील पत्नी की ईच्छा, धन–धान्य एवं औलाद की इच्छा मनुष्य को हमेशा असंतुष्ट रखती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जो भी मिला है उसे पाकर जहां मानव का हृदय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व धन्यवाद से भरा रहना चाहिए था कि ''हे ईश्वर आपने जो कुछ भी मुझे दिया है, उसके लिए तेरा लाख–लाख शुक्र है, किन्तु मनुष्य असंतोष के कारण उपलब्ध वस्तुओं का उपभोग नहीं कर पाता।

संसार में कुछ व्यक्ति हर हाल में ईश्वर की कृपा का अनुभव करते हैं। इसी संदर्भ में एक फकीर की कथा प्रस्तुत है।

''एक बार एक फकीर अपने दो शिष्यों के साथ एक नगर में भ्रमण कर रहे थे जब उन्हें भूख लगी, तो वे एक द्वार पर भिक्षा लेने गए तथा आवाज लगाई – नारायण हरि ! द्वार खुला, एक महिला आई और फकीर को देखकर हाथ जोड़कर राम–राम किया और कहा–क्षमा करें

महाराज, आज भिक्षा में देने के लिए घर में केवल एक सूखी रोटी व अचार ही है फकीर ने वह भिक्षा सहर्ष स्वीकार की और आशीर्वाद देते हुए आगे बढ़ गए। दूसरे द्वार पर गए तथा आवाज लगाई–नारायण हरि! द्वार खुला और झटके के साथ बंद कर दिया गया मतलब साफ था कि वहां पर भी कोई भिक्षा नहीं मिलेगी। फकीर सरल स्वभाव के थे। वे मुस्कराए और अपने शिष्यों के साथ आगे बढ़ गए। आगे भी उन्हें भिक्षा नहीं मिली। इसी तरह वे अपने एक दिन में पांच घरों से भिक्षा मांगने के नियमानुसार कुल पांच घरों में भिक्षा मांगने गए, लेकिन उन्हें एक घर के अतिरिक्त और कहीं भिक्षा नहीं मिली। रात को उन्होंने एक रोटी बांटकर खाई और भगवान का धन्यवाद किया कि वाह! प्रभू आप कितने दयालू हैं, आपका कोटि–कोटि धन्यवाद है और प्रार्थना करके सो गए। दुर्भाग्य कहो या फकीर की परीक्षा, उन्हें अगले दो दिन तक कोई भिक्षा नहीं मिली, उन्होंने केवल पानी पीकर ही सन्तोष किया। तीनों दिन वे कहते रहे शायद ईश्वर की यही मर्जी है। उन्होंने उसी तरह भगवान की प्रार्थना की और सो गए। लेकिन उनके शिष्यों के द्वारा यह सब देखा न गया । उन्होंने आखिरकार अपने गुरू से पूछ ही लिया हे गुरूदेव! हमें तीन दिन में केवल एक सूखी रोटी व अचार ही भिक्षा में प्राप्त हुआ तथा हम सब भूख से व्याकुल हैं लेकिन आपके चेहरे पर तो शिकन/चिंता का कोई नामो निशान नहीं है कृपया हमें बताएं कि इसका क्या कारण है फकीर बोले–प्यारे शिष्यो! ईश्वर की हम सब पर असीम कृपा है कि उसने हमें मानव जन्म दिया है, जीवन में सुख–दुःख तो आते ही रहते हैं इनसे हमारा विकास ही होता है। ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। पहले दिन जो हमें एक रोटी व अचार मिला, हो सकता है शायद व भी हमारे नसीब में न था, लेकिन भगवान की अतिशय कृपा थी कि कम से कम हमें एक रोटी तो मिली। मैं। तुमसे एक प्रश्न पूछता हूं। बताओ क्या कोई पिता अपने बच्चे का अहित कर सकता है। आप सब कहोगे– नहीं । इसी प्रकार भगवान भी हमारा कभी अहित नहीं कर सकते। जीवन में जो कुछ भी घटित होता है वह हमारी भलाई के लिए ही होता है। यह सब हमारे शुभ तथा अशुभ कर्मो का ही फल होता है। जिससे हमें सुख व दुख की प्राप्ति होती है। गुरू जी का उत्तर सुनकर सभी शिष्य निरूत्तर हो गए।''

अतः हमें अपने हृदय को ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भरना चाहिए व आनन्द पूर्ण जीवन जीना चाहिए। जीवन में हमें जो कुछ भी प्राप्त है, उसे ईश्वर की कृपा का प्रसाद समझकर स्वीकार करना चाहिए तथा अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास अवश्य करें और यदि अथक प्रयास करने के बाद भी वह वस्तु प्राप्त न हो तो समझ जाएं कि ईश्वर की यही मर्जी है।

➢ **नवीन चंद्र जोशी**
कार्यकारी सहायक

निंदा

कबीर ने कहा है, निदंक नियरेशाखिए अर्थात् हमें निंदक को अपने निकट रखना चाहिए ताकि उसकी निंदा से हम अपनी कमियों और गलतियों को सुधार कर सके। इसलिए कबीर कहते हैं कि अपनी बुराई और निंदा करने वालों को हमेशा अपने नजदीक रखना चाहिए। निंदक को एक आईना मानना चाहिए जो हमारी गलतियों और कमियों से हमें अवगत करवाता है। लेकिन सवाल यह उठता है कि आईना हमेशा हमें हमारी ठीक तस्वीर दिखाता है या आईना हमें कभी गलत तस्वीर भी दिखा सकता है। जैसे कि धुंधनी, टेड़ी, मोटी इत्यादि। इसका मतलब यह कि सब आईने पर निर्भर करता है। इसी तरह निंदक पर ही निर्भर करता है कि वो हमारी किस तरह की तस्वीर प्रस्तुत कर रहा है। इसी तरह हमें उसी निंदक को अपने पास रखना चाहिए जो हमारी अच्छी और बुरी दोनों बातों को हमारे सामने रखे। उस निंदक को नहीं जिसका स्वभाव ही निंदा करना हो। जो कि निंदा में ही अपना समय व्यतीत करे। माना कि हमारे संविधान ने हमें बोलने का अधिकार दिया। हम अपनी भावनाओं को कभी भी कहीं भी व्यक्त कर सकते हैं। लेकिन इसके साथ नहीं कि हमने निंदा की है, हम निंदा कर रहे हैं और हम निंदा करते रहेंगे।

माना कि कुछ लोगों का प्रिय शौक होता है दूसरों की निंदा करना। ऐसे लोग हमेशा दूसरों में दोष ढूंढते रहते हैं। सदेव दूसरों में दोष ढूंढते रहना माननीय स्वभाव का एक बड़ा अवगुण है। दूसरों में दोष निकालना और खुद को श्रेष्ठ बताना कुछ लोगों का स्वभाव होता है। इस तरह के लोग हमें कहीं भी आसानी से मिल जाएंगे। कहीं भी कार्यालय में, घर में, बस में कहीं भी यात्रा करते समय। हम यह कह सकते हैं कि इस तरह के लोग हमें कहीं भी मिल सकते है किसी भी अवसर पर अच्छा अवसर हो या बुरा अवसर वो लोग निंदा करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। उन्हें उसके लिए किसी से इजाजत लेने की आवश्यकता नहीं होती। निंदा करने के लिए इस तरह के लोग स्वतंत्र होते हैं हम कह सकते हैं कि ये उनका जन्मसिद्ध अधिकार होता है।

जिनका स्वभाव है निंदा करना, वो किसी भी परिस्थिति में निंदा प्रवृति का त्याग नहीं कर सकते। लेकिन सच तो यह कि हम स्वंय को दूसरों से श्रेष्ठ साबित करने के लिए उनकी निंदा करते हैं। इसके पीछे उनका दूसरे व्यक्ति को सुधारने का विचार नहीं होता।

ऐसे लोग कबीर जी द्वारा लिखी पंक्ति को गलत साबित करते हैं। हम कह सकते हैं कि दूसरे की निंदा करना अपनी तारीफ करने का ही एक ढंग है। यह बताना उसकी अपेक्षा हम उससे अच्छे हैं लेकिन यह एक प्रकार से हीनभावना का सूचक है जो जितना अधिक हीनभावना से ग्रस्त होता है, वह उतना ही अधिक दूसरों की निंदा करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने की चेष्ठा करता है। किसी की निंदा करके हम अपनी श्रेष्ठता, काबिलियत व अहंकार को किसी के सामने अल्प समय के लिए तो संतुष्ट कर सकते हैं लेकिन किसी दूसरे व्यक्ति की अच्छाई, श्रेष्ठता, गुण जो कि उसकी अचल व्यवहार एवं गुण को कभी नष्ट नहीं कर सकते। जिस तरह बादल सूर्य की रोशनी को कुछ समय के लिए कम कर सकता उसे हमेशा के लिए नहीं हटा सकता है, उसी तरह निंदक भी किसी की निंदा करके उसके गुण को हमेशा के लिए नहीं हटा सकता।

➢ **निधी**
कार्यकारी सहायक

मत्स्य अवतार की कथा

कल्पांत के पूर्व एक बार ब्रह्मा जी की असावधानी के कारण एक बहुत बड़े दैत्य ने वेदों को चुरा लिया था। उस दैत्य का नाम हयग्रीव था। वेदों को चुरा लिए जाने के कारण ज्ञान लुप्त हो गया। चारों ओर अज्ञानता का अंधकार फैल गया और पाप तथा अधर्म का बोलबाला हो गया तब भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा के लिए मत्स्य (मछली) रूप धारण करके हयग्रीव का वध किया और वेदों की रक्षा की। भगवान ने मत्स्य का रूप किस प्रकार धारण किया इसकी विस्मयकरी कथा इस प्रकार है :

कल्पांत के पूर्व एक पुण्यात्मा राजा तप कर रहे थे। राजा का नाम सत्यव्रत था। सत्यव्रत पुण्यात्मा थे और बड़े उदार हृदय के थे। प्रभात का समय था। सूर्योदय हो चुका था। सत्व्रत कृतमाला नदी में स्नान कर रहे थे । स्नान करने के पश्चात् जब उन्होंने तर्पण के लिए अंजलि में जल लिया तो अंजलि में जल के साथ एक छोटी सी मछली भी आ गई। सत्यव्रत ने मछली को नदी के जल में छोड़ दिया। मछली बोली राजन जल के बड़े–बड़े जीव छोटे–छोटे जीवों को मारकर खा जाते हैं। अवश्य कोई बड़ा जीव मुझे भी मारकर खा जाएगा। कृपा करके मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए। सत्यव्रत के हृदय में दया आ गई । उसने मछली को जल भरे हुए अपने कमंडलु में डाल दिया। आश्चर्य! एक रात में मछली का शरीर इतना बढ़ गया कि कमंडलु उसके रहने के लिए छोटा पड़ने लगा। दूसरे दिन मछली सत्यव्रत से बोली 'राजन' मेरे रहने के लिए कोई दूसरा स्थान ढूंढिए क्योंकि मेरा शरीर बढ़ गया है। मुझे घूमने फिरने में बड़ा कष्ट होता है। सत्यव्रत ने मछली को कमंडलु से निकालकर पानी से भरे हुए मटके में रख दिया। किन्तु आश्चर्य कि मछली का शरीर रात भर में ही मटके में इतना बढ़ गया हैं कि मटका भी उसके रहने के लिए छोटा पड़ गया। दूसरे दिन मछली पुनः सत्यव्रत से बोली राजन मेरे रहने के लिए कहीं और प्रबंध कीजिए क्योंकि मटका भी मेरे रहने लिए छोटा पड़ रहा है। तब सत्यव्रत ने मछली को निकालकर एक सरोवर में डाल दिया, किन्तु सरोवर भी मछली के लिए छोटा पड़ गया। इसके बाद सत्यव्रत ने मछली को नदी में और उसके बाद समुद्र में डाल दिया । आश्चर्य, समुद्र में भी मछली का शरीर इतना अधिक बढ़ गया कि मछली के रहने के लिए वह छोटा पड़ गया। अतः मछली पुनः सत्यव्रत से बोली राजन यह समुद्र भी मेरे रहने के लिए उपयुक्त नहीं है। मेरे रहने की व्यवस्था कहीं और कीजिए।

सत्यव्रत विस्मित हो गया। उसने आज तक ऐसी मछली कभी नहीं देखी थी। वह विस्मय भरे स्वर में बोला मेरी बुद्धि को विस्मय के सागर में डुबो देने वाले आप कौन हैं?

आपका शरीर जिस गति से प्रतिदिन बढ़ता है उसे दृष्टि में रखते हुए बिना किसी संदेह के कहा जा सकता है कि आप अवश्य ही परमात्मा है। यदि वह बात सत्य है तो कृपा करके बताएं की आपने मत्स्य का रूप क्यों धारण किया ? सचमुच, वह भगवान श्री हरि ही थे। मत्स्य रूपधारी श्रीहरी ने उत्तर दिया 'राजन! हयग्रीव नामक दैत्य ने वेदों को चुरा लिया है। जगत में चारों ओर अज्ञान और अधर्म का अंधकार फैला हुआ है। मैंने हयग्रीव को मारने के लिए ही मत्स्य का रूप धारण किया है। आज से सातवें दिन पृथ्वी प्रलय के चक्र में घिर जाएगी। समुद्र उमड़ उठेगा। भयानक वृष्टि होगी। सारी पृथ्वी पानी में डूब जाएगी। जल के अतिरिक्त कहीं कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होगा। आपके पास एक नाव पहुंचेगी, आप सभी अनाजों और औषधियों के बीजों को लेकर सप्तऋषियों के साथ नाव पर बैठ जाइएगा। मैं उसी समय आपको पुनः दिखाई पड़ूंगा और आपको आत्मतत्व का ज्ञान प्रदान करूंगा। सत्यव्रत उसी दिन से हरी का स्मरण करते हुए प्रलय की प्रतीक्षा करने लगे। सातवें दिन प्रलय का दृश्य उपस्थित हो उठा। सागर उमड़कर अपनी सीमा से बाहर बहने लगा। भयानक वृष्टि होने लगी। थोड़ी ही देर में जल ही जल हो गया। संपूर्ण पृथ्वी जल में समा गई। उसी समय एक नाव दिखाई पड़ी। सत्यव्रत सप्तऋषियों के साथ उस नाव में बैठ गए उन्होंने नाव के ऊपर संपूर्ण अनाजों और औषधियों के बीज भी भर लिए।

नाव प्रलय के सागर में तैरने लगी। प्रलय के उस सागर में उस नाव के अतिरिक्त कहीं भी कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। सहसा मत्स्यरूपी भगवान प्रलय के सागर में दिखाई पड़े। सत्यव्रत और सप्तऋषिगण मत्स्य रूपी भगवान की प्रार्थना करने लगे , हे प्रभो! आप ही सृष्टि के आदि हैं, आप ही पालक हैं और आप ही रक्षक हैं। दया करके हमें अपनी शरण में लीजिए, हमारी रक्षा कीजिए। सत्यव्रत और सप्तऋषियों की प्रार्थना पर मत्स्यरूपी भगवान प्रसन्न हो उठे। उन्होंने अपेन वचन के अनुसार सत्यव्रत को आत्मज्ञान प्रदान किया। बताया सभी प्राणियों में मैं ही निवास करता हूं। न कोई ऊँच है, न नीच। सभी प्राणी समान है। जगत नश्वर है। नश्वर जगत में मेरे अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है। जो प्राणी मुझ में देखता हुआ जीवन व्यतीत करता है वह अंत में मुझमें ही मिल जाता है।

मत्स्य रूपी भगवान से आत्मज्ञान पाकर सत्यव्रत का जीवन धन्य हो उठा। वे जीते जी ही जीवन मुक्त हो गए। प्रलय का प्रकोप शांत होने पर मत्स्य रूपी भगवान ने हयग्रीव को मारकर उससे वेद छीन लिए। भगवान ने ब्रह्मा जी को पुनः वेद दे दिए। इस प्रकार भगवान ने मत्स्यरूप धारण करके वेदों का उद्धार तो किया ही संसार के प्राणियों का भी अमित कल्याण किया। भगवान इसी प्रकार समय–समय पर अवतरित होते हैं और सज्जनों तथा साधुओं का कल्याण करते हैं।

➢ **रामकृष्ण पोखरियाल**
निजी सहायक

परशुराम अवतार

राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका और भृगुवंशीय जमदग्नि के पुत्र विष्णु के अवतार परशुराम शिव के परम भक्त थे। इन्हें शिव से विशेष परशु (कुल्हाड़ी) प्राप्त हुआ था। इनका नाम तो राम था किन्तु शंकर द्वारा प्रदत अमोघ परशु को सदैव धारण किए रहने के कारण ये परशुराम कहलाते थे। विष्णु के दस अवतारों में से छठा अवतार, जो वामन एवं रामचन्द्र के मध्य में हैं गिने जाते हैं। जमदग्नि के पुत्र होने के कारण ये जामदग्न्य भी कहे जाते हैं। इनका जन्म अक्षय तृतीय (वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीय तिथि) को हुआ था। अतः इस दिन व्रत करने व उत्सव मनाने की प्रथा है। परम्परा के अनुसार इन्होंने क्षत्रियों का अनेक बार विनाश किया। क्षत्रियों के अहंकारपूर्ण दमन से विश्व को मुक्ति दिलाने के लिए इनका जन्म हुआ था।

उनकी माता जल का कलश भरने के लिए नदी पर गई। वहां गंधर्व चित्ररथ अप्सराओं के साथ जलक्रीड़ा कर रहा था। उसे देखने में रेणुका इतनी तन्मय हो गई कि जल लाने में विलंब हो गया तथा यज्ञ का समय व्यतीत हो गया। उसकी मानसिक स्थिति समझकर जमदग्नि ने क्रोध के आवेश में बारी–बारी से अपने चारों बेटों को मां की हत्या करने का आदेश दिया। किन्तु परशुराम के अतिरिक्त कोई भी ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हुआ। पिता के कहने से परशुराम ने माता का शीश काट डाला। पिता के प्रसन्न होने पर उन्होने परशुराम को वर मांगने को कहा तो उन्होंने चार वरदान मांगे।

1. माता पुनर्जीवित हो जाएं
2. उन्हें मरने की स्मृति न रहे
3. भाई चेतना युक्त हो जाएं
4. मां परमायु हो।

जमदग्नि ने उन्हें चारों वरदान दे दिए।

दुर्वासा की भांति ये भी अपने क्रोधी स्वभाव के लिए विख्यात हैं । एक बार कार्तवीर्य ने परशुराम की अनुपस्थिति में आश्रम उजाड़ डाला था जिससे परशुराम ने क्रोधित हो उसकी सहस्त्र भुजाओं को काट डाला। कार्तवीर्य के सम्बन्धियों ने

प्रतिशोध की भावना से परशुराम के पिता जमदग्नि का वध कर दिया। इस पर परशुराम ने 21 बार पृथ्वी को क्षत्रिय–विहीन कर दिया। अंत में पितरों की आकाशवाणी सुनकर उन्होंने क्षत्रियों से युद्ध करना छोड़कर तपस्या की ओर ध्यान लगाया।

रामावतार में श्री रामचन्द्र द्वारा शिव का धनुष तोड़ने पर ये क्रुद्ध होकर आए थे। इन्होंने परीक्षा के लिए उनका धनुष श्री रामचन्द्र जी को दिया था। जब श्री रामचन्द्र जी ने धनुष चढ़ा दिया तो परशुराम समझ गए कि रामचन्द्र विष्णु के अवतार हैं। इसलिए उनकी वन्दना करके वे तपस्या करने चले गए।

परशुराम ने अपने जीवनकाल में अनेक यज्ञ किए। यज्ञ करने के लिए उन्होंने बत्तीस हाथ ऊँची सोने की वेदी बनवाई थी। महर्षि कश्यप ने दक्षिण में पृथ्वी सहित उस वेदी को ले लिया तथा फिर परशुराम से पृथ्वी छोड़कर चले जाने के लिए कहा। परशुराम ने समुद्र से पीछे हटकर गिरिश्रेष्ठ महेन्द्र पर निवास किया।

रामजी का पराक्रम सुनकर वे अयोध्या गए। दशरत ने उनके स्वागतार्थ रामचन्द्र को भेजा। उन्हें देखते ही परशुराम ने उनके पराक्रम की परीक्षा लेनी चाही। अतः उन्हें क्षत्रियसंहारक दिव्य धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाने के लिए कहा। राम के ऐसा कर लेने पर उन्हें धनुष पर एक दिव्य बाण चढ़ाकर दिखाने के लिए कहा। राम ने वह बाण चढ़ाकर परशुराम के तेज पर छोड़ दिया। बाण उनके तेज को छीनकर पुनः राम के पास लौट आया। रामजी ने परशुराम को दिव्य दृष्टि दी। जिससे उन्होंने राम के यथार्थ स्वरूप के दर्शन किए। परशुराम एक वर्ष तक लज्जित, तेजहीन तथा अभिमानशून्य होकर तपस्या में लगे रहे। तद्न्तर पितरों से प्रेरणा पाकर उन्होंने वधूसर नामक नदी के तीर्थ पर स्नान करके अपना तेज पुनः प्राप्त किया।

परशुराम कुंड नामक तीर्थस्नान में पांच कुंड बने हुए हैं। परशुराम ने समस्त क्षत्रियों का संहार करके उन कुंडों की स्थापना की थी तथा अपने पितरों से वर प्राप्त किया था कि क्षत्रिय संहार के पाप से मुक्त हो जाएंगे।

➢ **भूपाल सिंह**
कार्यकारी सहायक

माँ

ओ माँ.....।
आप इस सृष्टि में पूजनीय हैं
आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व है व्यापक।

माँ से मिलती निरन्तर ऊर्जा
मुझे तुझसे जीवन में संघर्ष करने की
माँ, तुम ममता का हो खजाना
आपसे ही स्नेह सुख जुड़ा है मन का

आपसे जुड़ा है जीवन का आधार
आज आप नहीं तो
लगता जीवन अंधकार
निरन्तर आपने जीवन से
संघर्ष करना सीखाया ।

सत्य के व्यापक अस्तित्व
से मुझे परिचय कराया
याद आती है स्मृति की असंख्य यादें।

बचपन में आपने
शिक्षा से सही गलत की
पहचान कराई उचित–अनुचित
जीवन के आदर्श पाठ से
मेरे व्यक्तित्व को।

निरन्तर मिलती थी नवीन प्रेरणा
दुख–सुख में धैर्य देती थी जीवन में
आपके इस आसीम व्यक्तित्व को
मेरा हृदय से कोटि–कोटि नमन।

➢ **गुलशन**
निजी सहायक

राज भाषा हिन्दी

किसी भी कार्य या विषय के संबंध में यदि हम नकारात्मक सोच रखते हैं तो उस कार्य में भला हम सफल कैसे होंगे क्योंकि किसी भी योजना के बारे में नकारात्मक सोच–विचार उसके कार्यन्वयन में बाधा बन जाते हैं। इस किसम की सोच हमे हतोत्साहित करती है। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को लेकर भी बहुत से लोगों कि सोच नकारात्मक है। इसीलिए अंग्रेजी को हटाकर उसके स्थान पर हिन्दी का प्रयोग उन्हें बहुत कठिन लगता है। जब हम ऐसा सोचने लगते हैं कि ये संभव नहीं है या ऐसा हो भी नहीं सकता तो वास्तव में वह काम होगा ही नहीं। वास्तव में किसी विषय के बारे में हमारी सोच नकारात्मक तभी बनती है जब हम उस विषय के साथ पूरी तरह जुड़ नहीं जाते।

सर्वविदित है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दे दिया गया था। 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी राजभाषा के रूप में स्वीकृत की गयी और 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान की धारा 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी हो गयी। हिन्दी को राजभाषा की पदवी पर विराजमान करना कोई कम बात नहीं है। हमारे देश में हिमाचल, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ, झारखण्ड, उत्तराखण्ड राज्यों और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में सरकारी कामकाज की भाषा हिन्दी का काफी जोरशोर से कार्यान्वयन हो चुका है। इन क्षेत्रों में कार्यालयों में कर्मचारी अधिकतर हिन्दी में ही कार्य करते हुए नजर आते हैं। इन क्षेत्रों के कार्यालयों, सार्वजनिक संस्थानों, ग्रामीण बैंको के कार्यालयों में भी हिन्दी में कार्य देखा जा सकता है। इन क्षेत्रों में अधिकतर कार्य हिन्दी में किया जाता है। इसलिए उन्हें 'क' सूची में रखा गया है तथा यहां पर शत–प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में करने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार 'ख' क्षेत्र, जिस में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ आते हैं में हिन्दी भाषा की लिपि से मिलती जुलती भाषाऐं चलती हैं। अतः इन क्षेत्रों में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों एवं व्यक्तियों के साथ शतप्रतिशत पत्राचार हिन्दी में करने का प्रावधान किया गया है। उपर्युक्त

सभी क्षेत्रों को छोड़ कर शेष क्षेत्रों को 'ग' क्षेत्र में रखा गया है तथा इन क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के साथ 65 प्रतिशत प्रत्राचार हिन्दी में करने के आदेश हैं। पत्राचार हिन्दी को बढ़ावा देने का एक बहुत बड़ा साधन है क्योंकि यदि पत्राचार हिन्दी में होगा तो उससे जुड़े अन्य कार्य जैसे बात–चीत तथा फाईल में नोटिंग आदि भी हिन्दी में ही करनी होती है। अतः पत्राचार हिन्दी के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका निभाता है।

उपर्युक्त के अलावा हिन्दी के समुचित कार्यान्वयन, उतरोतर प्रसार एवं प्रचार के लिए सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन, हिन्दी के कार्यान्वयन से संबंधित तिमाही प्रगति रिर्पोटों की मांग, मुख्यालय द्वारा हिन्दी कार्यान्वयन का निरीक्षण व संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण राजभाषा के कार्यान्वयन के पीछे एक बल की तरह कार्य करते हैं।

इसी प्रकार सरकारी कार्यालयों में हिन्दी कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा हिन्दी पखवाड़ों का आयोजन भी हिन्दी के कार्यान्वयन में एक बड़ी भूमिका निभाता है। हिन्दी के कार्यान्वयन से संबंधित उपर्युक्त सभी बातों को हल्के में लेकर यदि हम इस विषय में नकारात्मक सोच रखते हैं तो ये हमारी भूल है। हिन्दी कार्यान्वयन के पीछे उपर बताया गया इतना विस्तृत तंत्र जो काम कर रहा है उसे कार्यालयों में जा कर देखा जा सकता है। ये सत्य है कि सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग राजभाषा कार्यान्वयन की राह में एक समस्या बन कर खड़ा है किन्तु ऐसा सोचना भी गलत है कि इसका कोई हल नहीं

➢ **प्राची गुसाईं**
कार्यकारी सहायक

जिंदगी के रंग

जिंदगी में कई बातें ऐसी हो जाती हैं जो उसे बदल के रख देती है। ऐसी ही काफी पुरानी बात है। झारखण्ड के धनबाद के समीप जडंड़ी नामका एक कसबा है तथा सामने ही एक स्टेशन भी है। वहां कुछ चाय की अंगीठी भी हैं। यहां आकर सभी चाय पीते हैं। सवेरे कंपा देने वाली सर्दी में एक आदमी बनियान में चाय की अंगीठी पर पहुंचा वह जहां भट्टी जल रही थी चुपचाप खड़ा हो गया। देखने पर किसी अच्छे परिवार का 35 साल का युवक लगा रहा था। चेहरे पर परेशानियां साफ दिख रही थी। मुंह सूखा हुआ था, आंखें धसी लग रही थी,ऐसा लग रहा था कई दिन से खाया पीया न हो। उसके चहरे पर चोट के भी कई निशान थे। वह बहुत देर तक वहां बैठा रहा । अपने पांव के अंगूठे से जमीन कुदेरता हुआ वह ध्यान मग्न था। किसी के आहट से वह चौक कर खड़ा हो गया। चाय वाला कुछ पूछ रहा था, हिन्दी न जानने के कारण वह कुछ भी बताने में असमर्थ था। इतने में ठेकेदार का मुंशी अपने कुछ साथियों के साथ चाय की अंगीठी पर चाय पीने आया चाय वाले ने उसे बताया कि यह आदमी बहुत देर से यहां बैठा हुआ तथा पूछने पर कुछ बाताता भी नहीं है। मुंशी अजय ने ऊपर से नीचे तक उस आदमी को गौर से देखा । देखने पर किसी अच्छे परिवार का आदमी लग रहा था। अजय ने पहले चाय वाले से एक और स्पेशल चाय बनाने को कहा आपने हाथ से अजय ने कुछ बिस्किट और चाय मुस्कुराते हुए उसकी ओर बढ़ाये। उस संकोची आदमी ने अत्यंत भूखा रहने के बावजूद भी तुरंत हाथ नहीं बढाया और मुस्कराहट का जवाब उसने मुस्करा कर ही दिया । अजय ने उसके कंधे पर हाथ रखकर अंगूठी के अंदर बैठाया और चाय पीने का आग्रह करने लगा। उसकी आंखें छलक गई किसी ने अभी तक उससे कुछ पूछा भी नहीं था। धीरे–धीरे उसने चाय की ओर हाथ बढ़ाया और चाय अपने हाथ में ले ली। चाय की ओर वह इस तरह देख रहा था कि जैसे कि कोई अद्भुत पेय हो। उसने अंग्रेजी में एक ग्लास पानी पीने की इच्छा प्रगट की । तुरंत उसे पानी दिया गया एक सांस में वह पानी पी गया और फिर चाय की ओर देखने लगा। अजय ने उसे बिस्कुट लेने का भी आग्रह किया। वह एक बिस्किट लेकर चाय में डालकर उसे खाने लगा, अजय की ओर कृतज्ञता से देखते हुए चाय का दो घूंट लेने के बाद उसका चेहरा धीरे–धीरे खिलने लगा। भूख क्या होती है इसे वह समझ चुका था। जिंदगी के कितने रूप हैं उसे भी वह समझ और भुगत चुका था। कब किसके साथ क्या हो जाए इसे सिर्फ नारायण ही जानते हैं। इस बीच अजय ने एक मजदूर को अपने घर भेज कर अपना पुराना शर्ट पेंट मंगवा लिया।

दो बिस्किट और चाय पी लेने के बाद उसके चेहरे पर तृप्ति आ गई थी। अजय ने बड़े प्रेम से उसे शर्ट पेंट पहन लने को कहा। कपड़ा लेते वक्त उसकी आंखें छलक गई बड़ी मुश्किल से उसे अपने आंसुओं को रोका। पुराना कपड़ा उसने धारण कर लिया जो कि उसे अजय के हम उम्र होने के कारण फिट आ गया। एक गहरी सांस लेने के बाद वह अपनी आप–बीती सुनाने लगा.....।

मद्रास जमशेदपुर ट्रेन से वह आ रहा था। झारखंड में प्रवेश करने के साथ ही उसके फर्स्ट क्लास बोगी में पांच लुटेरे घुस आए थे। आते ही उन लोगों ने आर्म के बल पर सभी को लूटना शुरू कर दिया। जो व्यक्ति अपना सामान देने में आनाकानी करता था उसे वे लोग बुरी तरह से पीटते थे। उन लुटेरों ने यहां आतंक का माहौल बना दिया। उसके पास आकर उन्होंने उसका भी सामान लूट लिया। उसने उन लोगों से आग्रह किया कि कम से

कम उसे उसकी फाइल तो दे दें। इस बात पर उसे बुरी तरह से पीटा गया और उसे अपना सूट पेंट भी उतारने को विवश कर दिया। उसको इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया था। उसके शरीर पर चोट के भी घाव थे। उन लोगों ने उसका सबकुछ छीन लिया था। किसी ने भी उसे बचाने की कोशिश नहीं की। उसके अंगुली से एक अंगूठी नहीं निकल रही थी जिसके लिए उसे घसीट कर बाहर निकाला और उसे बाहर फेंक दिया। वह बेहोशी की हालात में वहीं बहुत देर तक पड़ा था।

सुबह होते ही सूर्य की किरणे जब उसके मुंह पर पड़ने लगी तो उसे होश आ गया था उसने अपने को सड़क के किनारे झाड़ियां के बीच पाया। चोट खाने की वजह से उसका सारा शरीर दर्द कर रहा था। वह किसी तरह उठा और रेलवे लाइन से बाहर की तरफ बढ़ा और किसी तरह उस चाय की अंगूठी तक पहुंचा। उसे धनबाद उतरना था और वहां कार्य समाप्त करके वायुमार्ग से मद्रास लौटना था। उस समय रांची एअर पोर्ट से मद्रास जाया जाता था।

अजय अपने पिता के निधन के बाद परिवार को चलाने के लिए एक कोयला कंट्रेक्टर के यहां मुंशी का काम देखने लगा। उसने स्थानीय कॉलेज से बी. ए. किया था और कम्पीटीशन की तैयारी कर रहा था पर पिता की मृत्यु के पश्चात् उसे परिवार के चलते नौकरी करनी पड़ी। घर पर मां और दो छोटी बहन थी इन लोगों की जिम्मेदारी भी अजय के ऊपर आ गयी थी जिसे वह इस गरीबी में भी उत्साह और धैर्य के साथ पूरा कर रहा था।

आगुंतक ने सबसे पहले एफआईआर करने की जिज्ञासा प्रकट की । अजय उसे पास ही स्थित थाने ले गया । थाने पर उसे धनबाद रेलवे पुलिस में एफआईआर करनी की सलाह दी। अजय उसे अपने साथ घर ले आया और मां से खाना लगाने को कहा। उसने पहले से एक आदमी का अधिक खाना बनाने के लिए कह रखा था। उसने मां से उसकी आपबीती सुनाई और कहा किसी अच्छे परिवार से लगता है। इस बीच घर पर रखा मलहम उसके जख्मों पर अजय ने लगा दिया। खाने से पहले उसने पानी से अपने को साफ किया। फिर दोनों नीचे बैठकर भोजन करने लगे। अजय की मां ने बड़े प्रेम से दोनों को खाना खिलया । खाना खाने के बाद आगुतंक ने कहा कि आप मेरे सिर्फ मद्रास तक जाने की व्यवस्था कर देते तो बड़ी कृपा होती, घर पहुंच कर मैं आपके पैसे लौटा दूंगा।

अजय उसे लेकर अपने ठेकेदार के पास गया और पता लगाया कि कितना खर्च आएगा। धनबाद से मद्रास तक का उसमें रू. 150/– का टिकट आ रहा था। फिर भी अजय ने रू. 200/– एडवांस के रूप में लिया और उसे धनबाद छोड़ने तक कि व्यवस्था करने लगा जो कि उस कसबे से 35 कि.मी था। दोनों धनबाद जा रही ट्रेन पर बैठकर धनवाद आए। अजय को लौटना भी था । अजय ने उसके हाथों मे 50 रूपये देकर कहा रास्ते में कुछ खा लेना और अपना ख्याल रखना सिर्फ टिकट का 150 रूपये लौटाना है।

अजय धनबाद से लौट गया था। उनके साथी भी कह रहे थे कि 200 रूपये का चूना लग गया। लेकिन अजय का मन कह रहा था कि वह जरूरतमंद था और भला सा दिख रहा था। मेरे साथ छल नहीं करेगा। अगर कर ही दिया तो क्या मेरी तकदीर ले लेगा? समय बीत रहा था ठीक 17 दिन पर अजय के ऑफिस के पते पर एक रजिस्ट्री आई। अजय उस वक्त खाना खाने घर गया था। डाकिया ने बताया कि उनके नाम से मनीआर्डर भी है। मनिआर्डर के नाम पर सभी चौंके उनके लोगों को 17 दिन पहले की घटना याद आई। मनिऑर्डर मद्रास से हुआ था। भेजने वाले का नाम राजन रेड्डी था। इस बीच अजय ऑफिस आ गया था। उसके नाम से 500 रूपये का मनिऑर्डर था । उसे आश्र्चय भी हुआ उसने तो उसे 150 रूपये रेल खर्च का ही भेजने को कहा था। उसका तो सिर्फ रूपये 200 ही खर्च हुआ था। 500 रूपये तो बहुत ज्यादा था। उस जमाने के हिसाब से ठेकेदार कह रहा था कि कोई पागल था, पर उसके साथियों के चेहरे पर हर्ष की छाया थी उन लोगों को अपनी पार्टी नजर

आ रही थी। अजय को 300 रूपये का लाभ हुआ था। अजय ने उसी समय ठेकेदार के 200 रूपये लौटा दिए और अनमने मन से रजिस्ट्री खोलने लगा । जिन पर सभी की नजर थी। रजिस्ट्री भी काफी मोटी नजर आ रही थी। अंदर क्या है ये एक रहस्य ही बना हुआ था। अंदर का कागज बाहर किया और सभी को खोलने लगा। अंदर के कागजों को देख कर वह चौक पड़ा। उसमें उसके परिवार के सभी सदस्यों का रांची से मद्रास का एअर टिकट था और उसका नियुक्ति पत्र जिसमें उसे कंपनी का जनरल मैनेजर बनाया गया था और अनुरोध किया गया था कि आप उपरोक्त तिथि तक आकर पदभार ग्रहण करनें की कृपा करें और हमें सूचित करें। 200 रूपये और अन्य सुविधा अलग। उस समय ठेकेदार से उसे 200 रूपये मिलता था। उसकी मां और दोने बहनें और उसके खुद का टिकट एअर टिकट उसमें संलग्न था। उसने आज तक हवाई यात्रा नहीं की थी। ठेकेदार और अन्य लोगों का आश्चर्य से आंख खुला हुआ था। सभी अपने को कोस रहे थे कि बाबू बन जाएगा और हवाई जहाज से मद्रास जाएगा। अच्छा पागल हाथ लगा है। सभी को इसके भाग्य से ईर्ष्या और जलन हो रही थी पर डबल पार्टी के नाम पर सभी अपने को खुश दिखा रहे थे।

घर आकर उसने अपनी मां से सभ कुछ बताया और मद्रास जाने की उक्त तिथि बताई। दोनों बहनें हवाई यात्रा के नाम से काफी खुश थीं। जिंदगी ने अजय के लिए करवट ली थी। कब किसके साथ क्या जाए उसे कोई नहीं जानता। नियत तिथि पर अजय परिवार के साथ मद्रास एअर पोर्ट पर उतरा और उसे ये देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके आगवानी के लिए बहुत से लोग यहां एकत्रित हुए थे। उन सभी के हाथों में फूलों की माला थी, वह आगुंतक भी उन लोगों के बीच खड़ा होकर मंद मंद मुसकुराते हुए उन लोगों की ओर देख रहा था। उसके हाथों में भी माला थी। 15 गाड़ियों के काफिलों के साथ उसे पहले जनरल मैनेजर के आवास पर लाया गया। जहां पहले से बहुत से लोग स्वागत के लिए कतार में खड़े थे। घर के द्वार को रंगोली से सजाया गया था, प्रवेश द्वार को केले के पेड़ से फूलों द्वारा सजाया गया था ऐसा लग रहा था कि मेहमान बहुत विशिष्ट और खास है।

अजय और उसकी माँ और बहने अचंभित सी चारों ओर देख रहे थे। उन लोगों के गाड़ी से उतरते ही शंख ध्वनि से दिशाएं गूंज गई। जैसे लगा भगवान पधार रहे हैं। शंख ध्वनि के बीच ही अजय और उसके परिवार को गृह प्रवेश कराया गया। घर काफी विशाल था, ड्राइंगि रूम से ही दोनों ओर से कारपेट से सजा हुआ ऊपर के रूम में (श्यन कक्ष) में जाने का रास्ता था। उन लोगों की ड्राईंग रूम के आराम देह सोफा पर बैठाया गया। सबसे पहले शीतल जल लाया गया इसके बाद नारियल पानी के साथ कई प्रकार के जूस उन लोगों के सामने रख दिये गये।

अजय को ये सब स्वप्न की तरह लग रहा था, जिंदगी ऐसी करवट लेगी उसे विश्वास भी नहीं हो रहा था। इसकी इस छोटी सी मदद के बदले उसे क्या से क्या बना दिया, ईश्वर की इस लीला को देखकर उसका दिल भर आया। सामने दीवार पर श्रीबालाजी की छवि को देखकर उसने उनके चरणों की ओर देखते हुए अपने घुटनों के बल खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया। उसकी आंखें छलक गई थी और आंसूं रोकने से भी नहीं रूका था, जिसे सभी ने देखा। आंगतुक को लगा थोड़ा कर्ज अदा हुआ, मुझे बचाने वाले के ये खुशी के आंसू है जिसे उसने देवता के चरणों पर फूल के रूप में अर्पित कर दिया दोनों की नजरें मिली मुस्कराहटों का आदान प्रदान हुआ दोनों एक दूसरे को जैसे बधाई दे रहे हों।

➢ **जयंत ठाकुर**
कार्यकारी सहायक

इंटरनेट और हिन्दी

लगभग 15 वर्षों से लोकप्रिय हुआ इंटरनेट आज करोड़ों लोगों की रूची के साथ–साथ आजिविका का साधन बन गया है। भारत जैसे देश में, जहां की सम्पर्क भाषा हिन्दी है नेट पर इसका प्रयोग नगण्य हैं इसका मुख्य कारण यह है कि इस नई विधा से संबंधित शब्दावली अंग्रेजी में है जिसे थोड़ी बहुत अंग्रेजी जानने वाला व्यक्ति भली प्राकर से समझ तो लेता है किन्तु हिन्दी की टाईपिंग की जानकारी न होने के कारण हिन्दी कंटेन्ट बहुत ही कम देखने का मिलता है इसलिए इसे आजिविका का साधन भी नहीं बनाया जा सकता।

हमारे यहां अंग्रेजी की टाईपींग जानने वालों की कमी नहीं है इसलिए ऐसा उपक्रम कम ही किया जाए कि क्वेर्टी की बोर्ड की तरह हिन्दी का की बोर्ड भी विकसित किया जाए। हमने कभी चीन जापान कोरिया अथवा रूस आदि देशों की तरह की बोर्ड को विकसित रूप से तैयार करने की कोशिश नहीं की। इसीलिए हजारों लोग जो हिन्दी में क्वालिटी कनटेन्ट विकसित कर सकते हैं इससे वंचित रह गये हैं। ऐसी विधि पर भी काम हुआ है कि की बोर्ड से ही हिन्दी टाईप की जाए। काम हुआ भी है नये–नये फॉन्टस भी बनाए गये हैं किन्तु उनका इस्तेमाल इतना आसान नहीं। पहले पहल छोटे–छोटे स्टिकर, जिनपर हिन्दी के अक्षर होते थे चिपकाकर उनकी सहायता से टाईप किया जाता था। परन्तु यह प्रक्रिया बहुत कठिन थी। एक छोट–सा पैराग्राफ लिखने पर भी काफी समय लग जाता था किन्तु पिछले कुछ वर्षों से, जबसे गूगल ट्रांसलेशन की सुविधा प्राप्त हुई है हिन्दी की बोर्ड से टाईपिंग बहुत आसान हो गई है। इसके अलावा गूगल मोबाईल पर प्रयोग हेतु सरल हिन्दी के की बोर्ड पर कार्य कर रहा है। ऐसे की बोर्ड के आने से निश्चित ही हिन्दी टाईपींग के की बोर्ड को बहुत बढ़ावा मिलेगा।

एक अच्छी खबर ये है कि गूगल ने हाल ही में कुछ चुने हुए हिन्दी बोगर का ग्रुप बनाया है, जिसका मकसद www पे हिन्दी कंटेंट को बढ़ावा देना और उसमें जो भी बाधाएं आ रही हैं उन्हें दूर करना है। इसमें हिन्दी ब्लॉगर्स को मोनेटाइस करने की समस्या भी शमिल है। इसका मतलब ये हुआ कि जो हमारी दूसरी बड़ी समस्या है वो कुछ दिनों बाद गूगल एडसेंस द्वारा हिन्दी भाषा को सपोर्ट करने से दूर होने वाली है। इसका मतलब हिन्दी ब्लॉगिंग के भी अच्छे दिन आने वाले हैं।

ब्लॉगिंग से पैसा कमाना काफी हद तक ट्रेफिक पर निर्भर करता है। इसलिए अभी जो समय है उसे अपना ट्रेफिक बढ़ाने में लगाइये। एक अन्य जरूरी बात यह है कि वैल्यू क्रियेट करें।

दरअसल ब्लॉगिंग या कोई भी एक्टिविटी बिना जोश, बिना entnusiasm के ज्यादा दिन नहीं चल सकती। जिस तरह एक बलाकर का जोश उसके दर्शक की तालियां होती है उसी तरह एक ब्लॉगर का जोश उसके ब्लॉग पर आने वाला ट्रैफिक और उनसे मिलने वाले कम्मेंट्स होते हैं। अब हिन्दी ब्लॉगिंग में पैसा तो पहले से ही कम है और से प्रश्न करें क्या ये पोस्ट मेरे रीडर्स के लिए उपयोगी है? क्या इसे पढ़ने से उन्हें किसी तरह का लाभ मिलेगा? लाभ कई तरह से हो सकता है, आपका लेख लोगों को नई दिशा में सोचने पर मजबूर कर उनकी सोच का दायरा बढ़ा सकता है, आपका लेख लोगों का मनोरंजन कर उनकी टेंशन दूर कर सकता है। आपका लेख लोगों में सकारात्मकता ला सकता है या आपका लेख किसी विषय विशेष पर लोगों की समझ बढ़ा सकता है, इत्यादि। इसलिए कुछ लिखते वक्त एट द बैक ऑफ यूअर मांइड ये बात रही चाहिए की मैं अपने रीडर्स के लिए बैल्यू क्रिएट कर रहा हूँ या नहीं? और अगर जवाब हां हो तभी अपने आर्क्लिस पोस्ट करें।

प्रेइस आने वाला समय पूरी तरह से इंटरनेट द्वारा डोमिनेट होने वाला है भारत के गांव–गांव तक अब इंटरनेट एनेब्लड स्मार्ट फोन्स पहुंच चुके हैं ओर इसकी रीच बढ़ती ही चली जानी है। ये भी स्पष्ट है कि जयादातर नए जुड़ने वाले कस्टमर्स छोटे शहरों और गांवों से होंगे। और ये इंग्लिश की बजाये हिन्दी में चीजे पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे। ऐसे में आज हमारे लिए कोई अच्छा अवसर लेकर आया है जब हम अपने बलबूते पर हिन्दी में क्वालिटी कंटेंन्ट, टैक्सट, ऑडियो या वीडियो के रूप में उपलब्ध कराके करोड़ों की वैब प्रोप्रर्टी क्रीयेट कर सकते हैं।

तो आइये हम सब मिलकर अपनी मातृभाषा की सेवा करें तथा अपनी मेहनत से हम इसे इंटरनेट पर इतना समृद्ध बना दें कि आने वाली पीढ़ी हम पर गर्व कर सके।

➢ **रोहित कुमार**
निजी सहायक

जीवन में ''सोच'' का महत्व

मनुष्य अपने जीवन में जो भी करता है या बनता है उसके पीछे उसका विवेक, आचरण, स्वभाव तथा माता–पिता द्वार दिये गये संस्कार होते हैं। इसके अलावा व्यक्ति की संगत भी उसके जीवन पर बहुत प्रभाव डालती है। किन्तु मनुष्य का ध्येय केवल उसका विवेक उसकी बुद्धी और उसकी सोच से तय होता है। दुनियां में करोड़ो लोग अलग–अलग कार्यों में लगे हुए हैं। इसका कारण उनकी अलग–अलग सोच है।

ईश्वर ने केवल मनुष्य को सोच विचार कर कार्य करने का गुण प्रदन किया है। इसलिए व्यक्ति जैसा सोचता है जैसा करना चाहता है और उसे करने के लिए जो रास्ता अपनाता है वही उसका वास्तविक स्वभाव होता है और अंत में मनुष्य वैसा ही बन जाता है। इसका मतलब यही है कि मनुष्य की विचारधारा का उसके भाग्य के साथ सीधा संबंध है। इसलिए अच्छा यह है कि मनुष्य एक अच्छी और स्पष्ट सोच लेकर आगे बढ़े।

हम किसी भी नयी चीज के निर्माण का विचार अपनी सोच से आरंभ करते हैं। आज हम जो भी सुविधांए प्रयोग में ला रहे हैं, वह मनुष्य के गहरी सोच–विचार का ही परिणाम है। यदि किसी ने ये ना सोचा होता कि एक बटन दबाकर घर को कैसे रोशन किया जा सकता है तो शायद बिजली का अविष्कार भी ना होता इसी प्रकार यदि मनुष्य दुरस्थ लोगों से सम्पर्क करने की बात ना सोचते तो शायद आज दूरभाष अथवा मोबाईल जैसे उपकरणों से हम वंचित रह जाते।

''एक अच्छी जिन्दगी के लिए एक अच्छी सोच का होना बहुत जरूरी है। क्योंकि सोच–विचार से व्यक्ति अपने इरादों को वास्तविकता में बदलने में कोइ न काइ ठोस रास्ता निकाल लेता है। सोच विचार करने या भविष्य के लिए सपने देखने में कोई ज्यादा अन्तर नहीं है। हमारा सोच–विचार, सपने एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन दोनों में यही अन्तर है कि सोच–विचार व्यवहार में बदल जाता है जबकि सपने व्यवहार के बाहर भी होते हैं और उन्हें व्यवहारिकता में बदलने में कड़े प्रयत्न करने पड़ते हैं।

व्यक्ति अपने विवेक और सोच के आधार पर कुछ भी बन सकता है और कुछ भी प्राप्त कर सकता हैं। एक सफल जिन्दगी के लिए एक निर्धारित विचार रखना बहुत आवश्यक है। जिसे बादमें कठोर परिश्रम द्वारा हकीकत में बदला जा सकता है। किन्तु एक बात याद रखनी चाहिए कि आप जितना बड़ा सोचेंगे उसके लिए आपको मेहनत भी उतनी ही ज्यादा करनी पड़ेगी।

देखा जाय तो व्यक्ति की नीयत और सोच में बहुत ज्यादा अन्तर नहीं होता क्योंकि उसकी सोच नीयत से प्रभावित होती है। इसलिए व्यक्ति के विचार से उसका चेहरा भी प्रभावित हो जाता है। आदमी वह नहीं है जो चेहरे से दिखता है आदमी वह है जो उसके विचारों से दिखता है।''

कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले प्रत्येक व्यक्ति उस पर सोच–विचार करता ही है तभी जा कर वह उस कार्य की एक रणनीति तैयार कर उसे सहज ही पूर्णता की ओर ले जाता है। यदि किसी व्यक्ति की सोच किसी कार्य के प्राति नकारात्मक बन जाती है तो उस कार्य का पूर्ण होना संभव नहीं हो पाता। यदि व्यक्ति को पहले से ही किसी लक्ष्य की प्राप्ती के बारे में किसी प्रकार का संदेह है तो उस कार्य की सफता भी सुनिश्चित नही होती। इसीलिए कहा गया है कि हमेशा सकारात्मक ही सोचें।

अंततः यही कहना होगा कि ''हम खुद अपने भाग्य के रचयिता है'' जैसा हम सोचेंगे और जिस दिशा में कदम बढ़ायेंगे वैसा ही हम पायेंगे और वैसा ही हम बनेंगे। अगर हम हमेशा दुःख, गरीबी, बीमारी इत्यादि के बारे में सोचेंगे तो हमको यही देखने को मिलेगा परन्तु यदि हम खुशी, शांति, दया, प्रेम आदि के बारे में सोचेंगे तो हमको ये सब हकीकत में होते हुए दिखेगा इसलिए हमेशा बड़ा सोचें, अच्छा, सोचें, औरों से जल्दी सोचें और ऐसा सोचें जिसको व्यवहार में क्रियान्वित किया जा सके तो आप निश्चय ही अपने जीवन में सफल होंगे।

➢ **रेखा जुयाल**
निजी सहायक

भलाई की जीत

मनुष्यों में भलाई और बुराई जैसी दो अलग–अलग प्रवृत्तियां पायी जाती हैं जो प्राय उनकी प्रकृति हो जाती है। भलाई करने से मनुष्य को जहां आत्मिक संतुष्टि का अनुभव होता है वहीं समाज में उसकी प्रतिष्ठा भी बढती है। भलाई मनुष्य का एक प्रकार से धर्म होता है जैसा की तुलसी दास जी ने कहा भी है कि ''पर हित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई'' समाज में दोनों तरह की प्रवृत्तियां रखने वाले लोग मिल जाते हैं और इन प्रवृत्तियों को त्यागना बहुत कठिन होता है। फिर भी देखा जाय तो भलाई में बहुत शक्ति होती है। जो कार्य हम जोर–जबरदस्ती अथवा प्रदर्शन आदि से नहीं कर सकते वह कार्य भलाई से संभव हो जाता है। बुराई करने वाले व्यक्ति के साथ यदि निरन्तर भलाई की जाए तो एक दिन वह भी बदल जाता है। इसी संबंध में एक कथा है:–

किसी गांव में भाग सिंह नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसकी काफी बड़ी खेती–बाड़ी थीं और वह सम्पन्न भी था। किन्तु उसने भलाई करने की प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं थीं। वह बड़ा घमण्डी व झगड़ालू किस्म का व्यक्ति था। किसी की भलाई करना तो दूर की बात है यदि किसी का काम बिगाड़ कर उसे कोई लाभ होता तो वह इससे भी पीछे नहीं हटता। इसलिए उससे गांव वाले भय खाते थे। उसी गांव में कृपा सिंह नाम का एक किसान भी आकर बस गया। वह मृदु भाषी एवं बहुत दयालु प्रकृति का व्यक्ति था। किसी का कष्ट उससे देखा नहीं जाता था। वह भाग कर उसकी सहायता के लिए पहुँच जाता। सभी गांव वाले उसका बहुत आदर करते थे। धीरे–धीरे गांव के लोंगों से उसे भाग सिंह की आदतों का पता चल गया। लोगों ने कृपा सिंह से कहा कि वह भाग सिंह से दूर ही रहे क्योंकि वह दुष्ट प्रकृती का व्यक्ति है। कृपा सिंह ने मुस्कराते हुए कहा कि भाग सिंह मुझ से क्यों झगड़ा करेगा। यदि उसकी ऐसी प्रकृति है तो मैं उसे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करूंगा।

कुछ दिनों में भाग सिंह को कृपा सिंह का पता चल गया और उसने अपनी आदत के अनुसार उससे टक्कर लेना शुरू कर दिया। कभी वह उसके खेतों में अपने पशु भेज देता कभी पानी के नाले का मुंह मोड़ देता। किन्तु कृपा सिंह ने इन बातों पर ध्यान न देते हुए पशुओं को अपने खेतों से बाहर कर दिया और नाले के मुंह को अपने खेतों की ओर कर लिया। परन्तु भाग सिंह से कुछ भी नहीं कहा। कृपा सिंह के खेत में खरबूजों की भरपूर फसल हुई तो उसने गांव वालों के साथ–साथ भाग सिंह को भी खरबूजे भेंट किए किन्तु भाग सिंह ने इसे अपना तिरस्कार समझकर कृपा सिंह के खरबूजे लौटा दिए। कृपा सिंह ने गांव में भण्डारा किया तो भी भाग सिंह उसमें शामिल होने नहीं आया।

एक दिन काफी बारिश हो रही थी और कृपा सिंह शाम को गांव लौट रहा था। सुनसान रास्ते पर उसने देखा कि भाग सिंह की बैल गाड़ी गड्डे में फंसी हुई थी जिसे वह निकाल नहीं पा रहा था। कृपा सिंह ने देखा कि जो लोग आ जा रहे थे वे उसकी बुरी आदत के कारण उसकी सहायत नहीं कर रहे थे। इस पर कृपा सिंह अपने बैलों को लेकर उसकी सहायता के लिए पहुंचा तो भाग सिंह ने उससे सहायता लेने के लिए साफ मना कर दिया। कृपा सिंह वापस आ गया किन्तु वह गांव न लौटा तथा आगे जा कर अपनी बैल गाड़ी एक ओर करके खड़ा हो गया। उसे पता था कि भाग सिंह मुसीबत में है ओर रात को सुन–सान रास्ते के कारण उसे लूटा भी जा सकता है। जैसे ही संध्या ढलने पर रास्ता सुनसान हुआ दो राहगीर भाग सिंह को लूटने के लिए उसकी तरफ बढ गये तथा उसे लूटने लगे। कृपा सिंह दूर से सब देख रहा था। वह अपना लट्ठ ले कर भागा आया और भाग सिंह के साथ मिल कर उसने लुटेरों को भगाने में उसकी सहायता की फिर अपने बैलों की मदद से उसकी गाड़ी गड्डे से बाहर निकाली ओर कहा की मैं जानता था कि तुम मुसीबत में हो और मैं तुम्हारे कहने पर भी गया नहीं व तुम्हारी रक्षा के लिए एक ओर खड़ा हो गया। ये सुनकर भाग सिंह का घमण्ड चूर–चूर हो गया व शर्म से उसका सर नीचा हो गया। उसे अपने व्यवहार पर बहुत पश्चाताप हो रहा था। कृपा सिंह ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा कि सुबह का भूला शाम को लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। दोनो वापस गांव आ गये और भाग सिंह ने अपनी सब बुरी आदतें छोड़ दीं।

➢ **फईमुद्दीन**
डेस्कटॉप स्पोट इंजिनियर

ओणम

भारत विविध संस्कृतियों वाला देश है कश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक इसमें विभिन्न विविधताएं देखने को मिलती है। जिनमें भौगोलिक स्थितियों के अनुसार यहां के त्यौहारों में भी विविधता पाई जाती है। भारत के कोने–कोने में मनाये जाने वाले विभिन्न त्यौहारों की रंग–बिरंगी वेशभूषा देखते ही बनती है।

भारत के दक्षिण में बसे केरल राज्य में मनाया जाने वाला ओणम का त्यौहार भी अपनी संस्कृतिक पहचान के लिए प्रसिद्ध है। इस त्यौहार की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस दिन लोग मंदिरों की जगह घर में पूजा करते हैं। इस पर्व के संबंध में यह भी बताया जाता है कि केरल क्षेत्र में महाबली नाम का एक असुर राजा हुआ करता था उसी के सम्मान में ओणम मनाते हैं। लोग इसे फसल और उपज के लिए भी मनाते हैं।

श्रावण मास की शुक्ल त्रयोदशी को मनाये जाने वाले इस त्यौहार को तिरू–ओणम भी कहा जाता है। श्रावण के महीने मे वैसे तो भारत का हर क्षेत्र हरा–भरा हो उठता है किन्तु केरल में इन दिनों मौसम बहुत सुहावन हो जता है। फसल पकने कि खुशी में लोगों के मन में एक नई उमंग नई आशा और नया विश्वास जागृत होता है। इसीलिए श्रावण देवता और फूलों कि देवी का हर घर में प्रसन्नचित हो कर पूजन किया जाता है। ओणम से दस दिन पूर्व ही इस त्यौहार की तैयारिया आरम्भ हो जाती है। हर घर में एक पुष्प गृह बनाया जाता है और कमरे को साफ करके इसमें गोलाकार रूप में फूल सजाए जाते हैं। त्यौहार से पहले आठ दिन फूलों की सजावट का कार्य चलता रहता है। नौवे दिन हर घर में भगवान विष्णु की मूर्ति बनाई जाती है व उनकी पूजा की जाती है। परिवार की महिलाएं इसके इर्द–गिर्द तालियां बजाते हुए नाचती हैं। इस नृत्य को थप्पतिकलि कहते हैं। रात्रि में गणेश जी और श्रावण देवता की मूर्तियां बनाईं जाती है और अगले दिन पूजा–अर्चना के बाद शाम को मूर्तिविसर्जन किया जाता है।

ओणम को विशेष कर नौका दौड़ के लिए जाना जाता है ये इसका महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती है। नौका दौड़ को बल्लमुकलि कहते हैं। इस दौड़ में बड़ी–बड़ी लम्बी नौकाएं, जिन्हें सर्प नौका भी कहा जाता है को बीस से चालिस तक व्यक्ति चलाते हैं।

इस त्यौहार से जुड़ा एक व्यंजन भी होता है जिसे वल्लसन कहते हैं। इसे हर घर में पकाया जाता है। प्रातः भाप से पके केले के पकवान खाये जाते हैं जो कि केरल में ही पैदा हुए एक विशेष प्रकार के केले से बनाए जाते हैं। इन्हें नेमद्रम कहा जाता है। इसके अलावा अन्य बढ़िया पकवान भी बनाए जाते हैं।

केरल सरकार इस त्यौहार को एक पर्यटक त्यौहार के रूप में मनाती है। इस अवसर पर न केवल केरल की सांस्कृतिक धरोहर बल्कि समूचा केरल राज्य नौका स्पर्धा, नृत्य, संगीत तथा महाभोज आदि कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है। ये त्यौहार केरल वासियों के जीवन के सौंदर्य को सहर्ष अंगीकार करने का प्रतीक है तथा भारत के सर्वाधिक रंगारंग त्यौहारो में से एक है।

➢ **मोहनकृष्णन**
कार्यकारी सहायक

मेरे साथ–साथ चलना

कसम है तुम्हें मेरी
जीवन में मेरे साथ–साथ चलना।
मेरा अस्तित्व लड़खड़ाए
तो थाम लेना मेरा हाथ
तुम मेरे जीवन की शाम में
सवेरा बन कर रहना
कभी रूठना मत
मेरे संग–संग चलना
कदम–कदम पर लगती ठोकर में
तुम ही सहरा हो
इसलिए गिरते को
तुम्हें संभालना होगा।
जीवन में कदम–कदम पर
एक प्रश्न पैदा हो जाता है।
तुम इसे सलुझाने के लिए
आड़ी तिरछी राहों में
मेरा हाथ थामे चलना
जब जीवन कच्चे घरोंदे सा हो
तो कब गिर जाए
कुछ नहीं कहा जा सकता।
इसे थामें रहना
मेरे साथ–साथ चलना।
कसम है तुम्हें मेरी
जीवन में मेरे साथ–साथ चलना।

➢ **रामकृष्ण पोखरियाल**
निजी सहायक

दर्द

दर्द को दर्द ही
मत समझो।
यह तो जीवन का
आनिवार्य तत्व है।
दर्द सहकर ही
पूर्ण हो सकते हैं कार्य।
दर्द को रूकावट मत समझो
लक्ष्य पाने का रास्ता है।
दर्द कमजोरी नहीं है
समझो तो शक्ति है, प्रेरणा है।
दर्द ही सत्य को उद्घाटित करता है
जीवन है तो दर्द है
दर्द है तो जीवन है।
दर्द गम है
तो इसे सहकर एक नया सवेरा आता है।
दर्द एक सत्य है, एक अर्थ है,
दर्द एक अनुभव है।
जो जीवन को देता है
एक रवानगी, एक लय
दर्द जीवन से ओत–प्रोत है।
शक्ति का स्रोत है
जीवन को दर्द ही
अंधेरों से बाहर ले जाता है।
इस लिए इससे डरो मत, भागो मत
दर्द को स्वीकार करो।
यही आपकी तपस्या होगी
और खुल जायगें
सफलता के द्वारा।

➢ **कपिलदेव**
कार्यकारी सहायक

सूरज

ब्रह्माण्ड में सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रह सूरज है क्योंकि सूरज ऊर्जा से परिपूर्ण है और ऊर्जा ही समग्र सृष्टी का निर्माण करने वाली शक्ति है। सूर्य के बिना इस ब्रह्माण्ड की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि प्रकाश एवं ताप का पुंज सूर्य ही इस पृथ्वी के फलने – फूलने का कारक है। सूर्य का प्रादुर्भाव क्यों हुआ और कैसे हुआ इस विषय में कहना मुश्किल है तथापि हमरे पुराणों की विभिन्न कथाओं में सूर्य देव की उत्पती के संबंध में भी एक कथा आती हैं

सत्ता को ले कर देवों और दैत्यों में युद्ध होते रहे हैं और दोनों पक्ष एक दूसरे पर आक्रमण करते रहे हैं। सत्ता के अधिकार के लिए दैत्य और देवताओं में शत्रुता उत्पन्न होने के कारण दैत्य सदा देवताओं पर आक्रमण कर युद्ध करते रहते थे। एक बार इसी बात को लेकर दैत्यों और देवों के बीच भयानक युद्ध हुआ। यह युद्ध अनेक वर्षों तक चला। इस युद्ध के कारण देवताओं और सृष्टि का अस्तित्व संकट में पड़ गया। अंत में दैत्यों से पराजित होकर देवगण जान बचाकर वन–वन भटकने लगे। देवताओं की यह दशा देखकर उनके पिता महर्षि कश्यप तथा माता अदिति दुखी रहने लगे। एक बार देवर्षि नारद घूमते–घूमते कश्यपजी के आश्रम की ओर आ निकले। वहां देव माता अदिति और महर्षि कश्यप को व्याकुल देखकर उन्होंने उनसे चिंतित होने का कारण पूछा। अदिति बोली ''देवर्षि! दैत्यों ने युद्ध में देवताओं को पराजित कर दिया है। इन्द्रादि देवगण वन–वन भटक रहे हैं। हमें उनकी रक्षा करने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। इसलिए हम चिंतित और व्याकुल है''। अदिति का कथन सुनकर नारद जी बोले ''माते! उपासना करके भगवान सूर्य को प्रसन्न करें और उनसे पुत्र रूप में होने का वर प्राप्त करें। सूर्य देव के तेज से समक्ष ही दैत्य परिजित हो सकते हैं और इस प्रकार देवताओं की रक्षा हो सकती है''। इस प्रकार अदिति को भगवान सूर्य की तपस्या करने के लिए प्रेरित कर देवर्षि नारद वहां से चले गए। तत्पश्चात अदिति कठोर तपस्या करने लगी। अनेक वर्ष बीत गए। अंत में भगवान सूर्यदेव साक्षात प्रकट हुए और उनसे मनोवांछित वरदान मांगने के लिए कहा। अदिति ने उनकी स्तुती की। तत्पश्चात बोली–''सूर्यदेव आप अपने भक्तों की समस्त इच्छाएं

पूर्ण करते हैं। आपकी पूजा– उपासना करने वाले कभी निराश नहीं होते। मेरी आपसे यह विनती है कि आप मेरे पुत्र के रूप में उत्पन्न होकर देवताओं की रक्षा करें। अदिति को मनवांछित फल देकर सूर्य भगवान अंर्तध्यान हो गए। कुछ दिनों के बाद सूर्य भगवान का तेज अदिति के गर्भ में स्थापित हो गया। एक बार महर्षि कश्यप और अदिति कुटिया में बैठे थे। तभी किसी बात पर क्रोधित होकर कश्यप ने अदिति के गर्भस्थ शिशु के लिए मृत शब्द का प्रयोग कर दिया। कश्यप ने जैसे ही 'मृत' शब्द को उच्चारण किया तभी अदिति के शरीर से एक दिव्य प्रकाश पुंज निकला। उस प्रकाश पूंज को देख कर कश्यप मुनि भयभीत हो गए और सूर्यदेव से अपने अपराध की क्षमा मांगने लगे। तभी एक दिव्य आकाशवाणी हुई ''मुनीवर ! मैं तुम्हारे अपराध को क्षमा करता हूँ। मेरी आज्ञा से तुम इस पुंज की नियमित उपासना करो। उचित समय पर इसमें से एक दिव्य बालक जन्म लेगा और तुम्हारी सभी इच्छाओं को पूर्ण करने के बाद ब्रह्माण्ड के मध्य में स्थित हो जएगा। महर्षि कश्यप और अदिति ने वेद मंत्रों द्वारा प्रकाश पुंज की स्तुति आरंभ कर दी। उचित समय आने पर उसमें से एक तेजस्वी बालक उत्पन्न हुआ। उसके शरीर से दिव्य तेज निकल रहा था। यही बालक 'आदित्य' और 'मार्तण्ड' आदि नामों से प्रसिद्ध हुआ। आदित्य वन–वन जाकर देवताओं को एकत्रित करने लगा। आदित्य के तेजस्वी और बलशाली स्वरूप को देख इन्द्र आदि देवता अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने आदित्य को अपना सेनापति नियुक्त कर दैत्य पर आक्रमण कर दिया। आदित्य के तेज के समक्ष दैत्य अधिक देर तक नहीं टिक पाए और शीघ्र ही उनके पांव उखड़ गए। वे अपने प्राण बचाकर पाताल लोक में छिप गए। सूर्यदेव के आशीर्वाद से स्वर्ग लोक पर पुनः देवताओं का अधिकार हो गया। सभी देवताओं ने आदित्य की जगत पालक और ग्रहराज के रूप में स्वीकार किया। सृष्टि को दैत्यों के आत्याचारों से मुक्त कर भगवान आदित्य सूर्यदेव के रूप में ब्रहमाण्ड के मध्य भाग में स्थित हो गए और वहीं से सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड का कार्य –संचालन करने लगे।

➢ **वीनू मदान**
कार्यकारी सहायक

बुद्धि

हर व्यक्ति प्राय धन को ही जीवन का आधार मानता है। धन प्रत्येक मर्ज की दवा है और कहा भी गया है कि ''दाम बनाये काम'' धन के साथ दो चीजे और भी जुड़ी होती है – बुद्धि और सफलता। देखा जाय तो इन तीनों का बहुत गहरा संबंध है। अकेला धन किसी को सफल नहीं बना सकता और सफलता के बिना धनार्जन कठिन है और सफलता के लिए बुद्धि अत्यावश्यक है। इसी विषय में एक कहनी हैः–

किसी गांव में एक किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। थोड़ी बहुत जमीन से उसका गुजर बसर चल रहा था। एक दिन जब वह काम पर गया हुआ था तो उसके घर तीन साधू आए और उन्होंने कहा की हम भूखे हैं क्या आप हमे भोजन करायेंगे। स्त्री ने कहा हां, अवश्य किन्तु इस समय मेरे पति घर पर नहीं हैं थोड़ी देर में वो घर पर आ जायेंगे तो मैं आपको भोजन करा दूंगी।

कुछ समय बीतने के बाद किसान घर आ गया तो पत्नी ने उसे साधुओं के आने की बात बताई और कहा कि वो भोजन करना चाहते हैं। किसान बोला हमे खुद को पूरा नहीं पड़ता तो साधुओं को कैसे भोजन करायेंगे। इस पर पत्नी ने कहा कोई बात नहीं हम थोड़ा खालेंगे किन्तु साधुओं को भोजन अवश्य कराना चाहिए। इस पर किसान मान गया। खाना बनने के बाद किसान की स्त्री साधुओं को आमंत्रित करने गई तो वे बोले हम में से एक बुद्धि है, एक सफलता है और एक धन है आप किसे बुलाना चाहेंगी। स्त्री ने पती से जाकर सारी बात बताई तो पती ने कहा कि मेरी बात ध्यान से सुनो और धन को बुला लो क्योंकि धन ही सब जरूरतें पूरी करता है और इसी के लिए हम रात दिन मेहनत करते हैं। ये ही सब कुछ है। पत्नी बोली मेरे विचार से हमें लालच न करके सफलता को बुलाना चाहिए क्योंकि सफलता मिलेगी तो धन अपने आप ही हमारे पास आ जायेगा किसी भी कार्य को करने के बाद ही सफलता मिलती है। पति पत्नी दोनों ही काफी देर तक लड़ते रहे और उनके लड़ने की आवाज भी बाहर तक उन साधुओं के कानों में जा रही थी।

अंत में पत्नी को पति की बात माननी पड़ी और वह बाहर आकर बोली कि आप तीनों में धन कौन है वे मेरे साथ अंदर आ जाये मेरे पति पहले उनके साथ भोजन करना

चाहते हैं। इस पर एक साधू बोला कि हे बेटी अब हम आपके घर नहीं जा सकते क्योंकि जहां सफलता होगी वहीं धन जायेगा इस पर स्त्री ने कहा कि सफलता आप अंदर आ जायें तब तक सफलता ने भी मना कर दिया और कहा कि जहां बुद्धि होगी वहीं सफलता और धन आयेगा। अब हम तीनों में कोई भी आपके साथ अंदर नहीं जायेगा और न ही भोजन करेगा। हम प्रत्येक दर पर जाते हैं और यही नियम अपनाते हैं और जो पहले बुद्धि को भोजन के लिए अमंत्रित करते हैं वहां पर हम दोनों स्वयं ही इनके साथ जाते हैं। हमें बुलाने की आवश्यकता भी नहीं होती।

यह सुनकर स्त्री काफी दुखी हुई और गलती पर बहुत पछताई।

➢ **पवन**
स्टोरमेन

हम से मुलाकात हो गयी

कई बार अनहोनी सी बात हो जाती है।
जब अपनी खुद से मुलाकात हो जाती है।।

हम खुदसे पूछते हैं कि तुम कौन हो।
खुद ही बोलते हैं सवाल बहुत पूछते हो।।

हमने पूछा क्या तुम्हारी शादी हो गई।
मैं झुंझला के बोला ये पुरानी बात हो गई।।

वह सामने आई तो हम लाजवाब हो गये।
चक्कर में फंस गये और चूर खवाब हो गये।।

अब तो सब नतीजे डिकलेयर हो चुके हैं।
हम पूरी तरह घर गृहस्थी में खो चुके हैं।।

उसको मिलती नहीं टेलीविजन से फुर्सत।
और हमें हो चुकी है सीरियलो से नफरत।।

अब सोचते हैं कि हम कुंवारे ही ठीक थे।
कोई गम नहीं था जीवन में बहुत निर्भीक थे।।

➢ **संजय चौहान**
मैसेंजर

नंदा राज की प्रचलित कथा

पहाड़ी क्षेत्र देव स्थानों के लिए प्रसिद्ध है। विशाल हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं में बसे उत्तराखण्ड को देव भूमि के नाम से जाना जाता है। गढ़वाल क्षेत्र में भी देवी–देवताओं की विधिवत् पूजा होती है। प्रत्येक देवी–देवताओं की पृष्ठ भूमि में गूढ़ कथा छिपी रहती है। नन्दा देवी के प्रसंग में भी ऐसी ही कथा कही गयी है। इस गांव में नेगी जाति के लोग रहते हैं। सदियों पहले इनके पूर्वज राजस्थान से आकर इस गांव में बस गए थे। इनके पूर्वज शूरवीर थे और यह गांव उन्हें उनकी शूरवीरता के लिए इनाम मे मिला था। नंदा नाम की एक बालिका इसी गांव की एक सुन्दर, सुशील व होनहार लड़की थी। एक मुहावरा है 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'। यह कन्या गांव की अन्य कन्याओं से बिल्कुल अलग थी। बच्चों से प्यार करना, बढ़े–बूढ़ों का आदर करना, असमर्थ अपाहिजों की मदद करना, अपने मुस्कराते चेहरे और मधुर व्यवहार से वह पूरे गांव के छोटे–बड़े सबका दिल जीत चुकी थी। सब लोग उसके उज्जवल भविष्य की कामना करते थे। गांव वालों को विश्वास था कि एक दिन इस लड़की को लेने के लिए एक बहुत सुन्दर लड़का आएगा और डोली में बिठाकर ले जाएगा। उस जमाने में आवागमन के साधन नहीं थे। लोग दूर–दूर तक पैदल ही सफर करते थे। इस कन्या के लिए भी एक रिश्ता दूर के गांव से आया था। लड़का गांव के लोगों के राजकुमार जैसा ही था। चौड़ा माथा, गोल खूबसूरत सा चेहरा, मजबूत कंधे, चमकदार आंखे, सुशील व नर्म स्वभाव। दोनो की जोड़ी बेमिसाल थी। शादी होते ही डोली सजाई गई। भरे दिल से डोली में बिठाया गया। गाजे–बाजों के साथ बारात ने प्रस्थान किया। बराती गाजे बाजे सहित सब मिलजुलकर नाचते हुए जा रहे थे। बारात चल पड़ी और नदी, जंगल, घाटियां पार करते हुए अब एक ऊँचे पर्वत की कठिन चढ़ाई पार करनी बाकी थी, इसके बाद ढलान आ जाता। डोली को बड़ी सावधानी से ले जाते हुए पहाड़ की चोटी पर बारात पहुंची। बराती काफी थक चुके थे, इसलिए डोली वालों ने डोली नीचे रखी और सारे बराती विश्राम करने लगे। अभी इन लोगों की थकान भी नहीं उतरी थी कि अचानक जोर की आंधी चली और फिर बर्फ पड़नी शुरू हो गई। इतने जोर सी बर्फ पड़नी शुरू हुई कि बारातियों को संभलने का अवसर ही नहीं मिला और सारे बराती उस बर्फ में दब कर मर गए। कोई नहीं बचा। कहते हैं वहां जितने लोग बर्फ में दबे थे, उतने ही पेड़ उग आए हैं। लड़की की आत्मा वापस अपनी मां के घर लौट

आई। उसी की याद में पूरे गांव वालों ने नंदा देवी के नाम से गांव में एक मंदिर बनवाया । पूरे गांव वाले बड़ी श्रद्धा से नंदा देवी की पूजा करते हैं और 25–25 सालों में एक बड़ी पूजा करवाते हैं। जिसमें नंदा नेगी के सारे परिवार, रिश्तेदार तथा गांव की सभी लड़कियों को बुलाया जाता है।

नंदाराज जात पर एक गीतः

''जय चक्रबंदनी जोग माया खप्पर भरनी
तू ही चामुंडा शैलपुत्री नंदा इंगला पिंगला दैत्याधातविनी
जब देवतों को अत्यचार हुए तब त्येर माता को जन्म हुए
राज राजेश्वरी गोरजा भवानी चमन्कोट चामुंडा
श्री गणेशाय नमः जय नमः उदहारिणी पिंगला महेश्वरी
महेश्वरी दैत्याथाऊ गेमन मिचाऊ तब त्वे देवी कै जाप सुनाऊ''

नंदा के इस शक्ति रूप की पूजा, गढ़वाल में करूली, कसोली, नरोना आदि स्थानों में होती है। गढ़वाल में राज जात यात्रा का आयोजन भी नंदा के सम्मान में होता है।

➢ **प्रदीप सिंह**
ऑफिस बॉय

जीवन में चलते रहना है

जीवन में चलते रहना है।
बिना रुके चलते ही जाना है।।

मंजिल जहां भी हो उसको पाके रहना है।
खुद में खुशियां खोजकर सब की खुशी बढ़ाना है।।

हर किसी के काम आना ही जीवन है।
हर किसी का दर्द मिटाते जाना है।।

खुशियों को फैलाते जाना है।
क्रोध हमेशा काबू में रख कर।
बैर विरोध से दूर ही रहना है।।

प्रतिदिन अपना वचन निभाना है।
रुकना नहीं चलते ही जाना है।।

तभी हमें मिल पाएगी खुशी।
जब सब के चेहरे पर होगी हंसी।।

इसी बात को अपने ध्यान में रखकर।
जीवन को साकार बनाना है।।

जीवन में चलते ही रहना है।
रुकना नहीं चलते ही जाना है।।

➢ **पवन कुमार**
ऑफिस बॉय

बेटियाँ

मैं 21 पार कर चुकी थी इसलिए मेरे घर वाले मेरे लिए लड़का खोजने लग गये कुछ दिनों बाद मेरी मां ने बुझे एक फोटो दिखाया लड़का देखने में सही लग रहा था। मां ने कहा घर बार भी ठीक है अगर तुम्हे पसंद है तो बता दे। मैंने कहा ''मुझे फोटो से तो पसंद है बाकी तो आप देखिये''। अगला सारा हफ्ता पिताजी दिन–तिथि तय करते रहे फिर एक दिन पता चला कि वे मुझे देखने आ रहे हैं। हमारा एक छोटासा घर था। जिसे मैंने अच्छी तरह साफ कर दिया। सर्दी का मौसम था अतः वे लोग ढाई–तीन बजे पहुँच गए। दो–तीन महिलाएं व एक– दो पुरूष व एक लड़का भी था। उन्हें बैठक में बिठाया गया। मुझे पता चला आने वालों में मेरे भावी सार–ससुर, देवर व ननद थे। पिताजी उनके पास बैठे थे।

कुछ देर बाद माँ मेरे पास आई और बोली अपना चेहरा व कपड़े आदि ठीक करके चाय आदि बना कर ले आओ। मैंने कुछ देर में चाय की ट्रे तैयार करली। मुझे काफी घबराहट हो रही थी। फिर मैंने ट्रे उठाई और बैठक की ओर आ गई। मैंने चाय मेज पर रख दी। मेरी माँ ने मुझे एक ओर बिठाकर स्वयं चाय पकड़ानी शुरू कर दी। एक भारी सी औरत, जो शायद मेरी सास हो सकती थी ने मुझे अपने पास बुलाया मेरा नाम पूंछा फिर बोली खाना वगैरह पकाना जानती है। मैंने धीरे से हां में सिर हिला दिया। मेरी सास और एक लड़की आपस में बतिया रहे थे '' लड़की है तो सांवली पर फिर भी सुंदर है। हमारा लड़का भी तो सांवला है जोड़ी ठीक ही रहेगी''। कुछ देर में चाय खतम हुई तो उन्होंने मुझे 501रू. तथा मिठाई का डिब्बा पकड़ा दिया। और कहा कि बेटी तुम हमें पसंद हो खुद को हमारे घर की बहू ही समझो। जब उन्होंने उठकर जाने के लिए कहा तो मेरे पिताजी ने उन्हें एक दो मिठाई के डिब्बे तथा पैसों का लिफाफा दे दिया।

कुछ दिनों बाद मेरे माता–पिता भी उनका घर देखने गये और वहीं लड़के को रोक कर आ गये। वो शादी जल्दी चा रहे थे लेकिन मेरे पिताजी ने कहा थोड़ा टाईम दे दीजिए।

जब लड़का –लड़की एक दूसरे को पंसद कर लेते हैं तो शादी में देर नहीं लगती। मेरी भी शादी हो गई और लगभग एक साल बाद मैंने एक साथ बेटियों को जन्म दिया। कुछ दिनों में मैं हॉस्पिटल से घर आ गयी किन्तु मैंने महसूस किया कि घर वाले जयादा खुश नहीं थे। खुसर–फुसर चल रही थी। मेरे पति भी मुंह लटकाए काम पर चले जाते। मेरी सास व ननद भी मेरा ज्याद ध्यान नहीं रख रही थी परन्तु मेरी जिठानी बहुत अच्छी थी। उसने मुझसे कहा बच्चे तो भगवान की देन होते हैं इसमें तुम्हारा क्या दोष है। किन्तु मैंने महसुस किया कि घर में कुछ ठीक नहीं चल रहा था। पन्द्रह – बीस दिन बाद मैंने अपने पति से मायके छोड़ आने के लिए कहा। मैंने देखा की मेरे जाने पर सारे लोग काफी खुश थे। अगने दिन मुझे मेरे पति मायके छोड़ गये। मेरे पति काफि अच्छे थे उन्होंने मुझे सांत्वना देते हुए कहा की मै शीघ्र ही तुम्हें लेने आऊंगा।

मुझे मायके आऐ हुए आज लगभग पन्द्रह दिन हो चुके थे। कल रविवार था मैं सुबह उठी तो तभी मेरे पति मुझे लेने आ गये। शाम को ससुराल पहुँची तो वहां का माहोल वैसा ही था। मेरे जाने पर कोई ज्यादा खुश नहीं हुआ। मैं भी अपने काम से काम रख कर बच्चियों को पालने

में लगी रहती लेकिन मैंने देखा कि वहां कुछ ठीक नहीं चल रहा था। सास मेरे पति से भी झगड़ती रहती थी। एक दिन घर के काम को लेकर वह मुझ से भी झगड़ पड़ी अब मैं दो छोटी बच्चीयां सम्भालती या घर का काम करती। शाम को पति आये तो मैंने उनसे कुछ नही बोला किन्तु जब सुबह वह ऑफिस चले जाते तो मेरे साथ तूतू मैं मैं हो जाती। मेरी ननद भी सास का साथ देती। ससुर भी कुछ खास बात नहीं करते थे। एक दिन तो हद्द हो गई जब बच्चियों को दूध देने के कारण काम न कर पायी तो वह मुझे पीटने को आ गई तथा मुझे बोरी बिस्तर बांधकर चले जाने के लिए कह दिया। शाम को पति लोटे तो मैने उन्हें सारी बात बता दी। पति बोले सारा झगड़ा तुम्हारे दो बेटियां पैदा करने के कारण है। तुम चिन्ता मत करो मैं शीघ्र ही कोई समाधान निकालूंगा।

अगले दिन वह मकान देख कर आये थे तथा सुबह हम लोगों ने शिफ्ट कर लिया। धीरे–धीरे हमारी गृहस्थी चल निकली किन्तु हमारा गुजारा कठिनाई से हो रहा था क्योंकि मेरे पति मेरे ससुर को भी कुछ पैसे प्रति माह देते थे। किन्तु मुझे इस बात पर कोई एतराज नहीं था। एक दिन छुट्टी के दिन मेरे मामा अचानक मेरे घर आये वे एक बड़े अस्पताल में एकाउंटेन्ट थे। उन्होंने मुझे अस्पताल में एक नौकरी बताई मैंने अपने पति से पूछ कर झट से हां कर दी। अगले दिन मैं अपना आवेदन लेकर हॉस्पिटल पहुंच गई। मुझे महिला वार्ड में नर्स की सहायता का काम मिल गया। पन्द्रह हजार रू. प्रति माह वेतन था। महीना पूरा होने पर मुझे वेतन मिला तो मैंने बच्चियों के कपड़े व घर का कुछ जरूरी सामान आदि खरीदा। शेष पैसे मैंने अपने पति को दे दिये। मेरे पति बहुत खुश थे।

मुझे नौकरी करते हुए एक वर्ष से उपर हो गया था। एक दिन मेरे पति ने मुझे बताया कि मां की तबियत बहुत खराब चल रही है। बड़े भैया का तबादला बाहर हो गया है। अब मां कि देखभाल करने वाला कोई नहीं है। न कोई दवा ठीक से चल रहा है। अगले दिन मैं अपने पति के साथ ससुराल गई और अपनी सास को अपने अस्पताल में दाखिल करवा दिया। जांच–पड़ताल से पता चला मेरी सास को कैंसर की बीमारी थी जो कि पहली स्टेज पर थी। डॉक्टरों ने कहा डर की कोई बात नहीं है देखभाल और दवाइयों से ये ठीक हो जायेंगी। मैंने हस्पताल में रहते हुए उनकी खूब सेवा की उनके खाने–पीने का भी ध्यान रखा। महीने भर की देखभाल के बाद डॉक्टरों ने आवश्यक दवाइयां लिखकर उन्हें अस्पताल से रिलीव कर दिया। वहां से मैं उन्हें सीधे अपने घर ले आई और पन्द्रह–बीस दिन की छुट्टी लेकर उनकी खूब सेवा की जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक हो गया और बीमारी पूरी तरह ठीक हो गई। इन दिनों मेरी दोनो बेटियों को भी वह अपने पास बिठाए रखती और उन्हे कहानियां सुनाती रहती वह भी उनसे काफी हिल–मिल गई। अब उन्हें अपने घर जाना था। रविवार का दिन था। ससुर उन्हें लेने आए तो वह मेंरे पैरों में गिर गई और कहने लगी, बहू मुझे माफ कर दो, दो लड़कियां पैदा होन पर, मैंने तुम पर बहुत सितम किये हैं और बहुत भला–बुरा कहा ना जाने मेरे दिमाग पर क्या पर्दा पड़ गया था कि पौते के चक्कर में मैंने तुम्हें घर से जाने दिया जिसका फल मैंने बीमारी के रूप में भुगता है तुमने मेरी जैसी सेवा की है शायद मेरी बेटी भी ना करती और इतना कह कर सास ने मुझे गले लगा लिया व हाथ बांध कर घर चलने के लिए कहा। दो–चार दिन में मैं फिर से ससुराल आ गई।

➢ **अनिल कुमार**
प्रेषक

राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

सम्पर्क : एनआरआरडीए
15 एनबीसीसी, टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस,
नई दिल्ली–110066

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों, कविताओं, कहानियों में व्यक्त किए गए विचारों का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। इसका एन.आर.आर.डी.ए. की नीतियों से कोई संबंध नहीं है। यह पत्रिका कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने व केवल आंतरिक वितरण के लिए हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य में प्रकाषित की गई है।